R.N.I. No.: UTTHIN/2015/63078

डाक पंजीयन :- UA/DO/DDN/25/2021-2023

श्रमयोग पत्र

सेवा में

.....

.....

.....

.....

वर्ष : 08 अंक : 08 (हिन्दी मासिक) देहरादून, 01 नवम्बर 2022 मूल्य - 5.00 ₹ प्रति पृष्ठ-8 वार्षिक मूल्य -100 ₹

नौवें महिला महोत्सव की तैयारियाँ जोरों पर

'सद्भावना व संवाद' है महोत्सव की थीम

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

अन्य वर्षों की भांति इस वर्ष भी रचनात्मक महिला मंच अपना नौंवा महोत्सव मनाने की तैयारी जोर-शोर से कर रहा है, जिसके लिए महिलाओं में खासा उत्साह है। नवाँ महिला महोत्सव शहीद स्मारक, खुमाड़ व राजकीय इंटर कालेज, खुमाड़ में मनाया जायेगा। अन्य वर्षो की अपेक्षा इस वर्ष महोत्सव कुछ खास है। इस वर्ष पहली बार इसे दो दिन तक मनाया जाएगा। दो दिवसीय महोत्सव के पहले दिन के कार्यक्रम 26 नवम्बर को शहीद स्मारक, खुमाड़ में व दूसरे दिन के आयोजन 27 नवम्बर को राजकीय इंटर कालेज, खुमाड़ मे आयोजित किये जाऐंगे। महोत्सव में पहले दिन परिचर्चा सत्र व दूसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाऐंगे। महोत्सव की थीम 'सद्भावना व संवाद' रखी गई है।

रचनात्मक महिला मंच की अध्यक्षा निर्मला देवी ने बताया कि पहले दिन 26 नवम्बर को परिचर्चा के लिए दो विषय रखे गये हैं -पहला विषय पंचायती राज की वर्तमान स्थिति व दूसरा ग्रामीण जीवन की चुनौतियों को लेकर हैं और दूसरे दिन 27 नवंबर को महोत्सव अन्य वर्षों की भांति चलेगा। महोत्सव में स्थानीय उत्पाद, खान-पान व संस्कृति प्रदर्शित की जायेगी। इस बार हर कलस्टर से एक-एक स्टॉल एंव एक-एक सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाएंगे।

महोत्सव की तैयारी के क्रम में किसी समूह में नाटकों की तैयारी चल रही है, तो कहीं झोड़ों की तैयारी। मांगल गीत गाने वाले मांगलिग गीतों को अभी से गुनगुना रहे हैं। कहीं मडुवे के कसार यानी हलवे पर तो कहीं अरसे बनाने की बातें चल रही हैं। यातायात के साधन को लेकर समूहों में चर्चाएं चल रही हैं। हांलांकि इस बार का असोज अभी समेटा नहीं गया फिर भी हर एक महिला इस बार के महोत्सव को खास बनाने की तैयारियों में जुटी हैं। मंच की सचिव सुनीता देवी ने मंच की सदस्याओं का आव्हान करते हुए कहा कि महोत्सव हमारे संगठन कि पहचान है। प्रत्येक सदस्या को इसमें बढ़-चढ़ कर भागीदारी करनी चाहिए। उन्होंने सभी सदस्याओं से महोत्सव की तैयारी शुरू करने की अपील की।

मंच ने अपना निमंत्रण पत्र बनाकर महमानों को भेजना शुरू कर दिया है। इस बार के महिला महोत्सव का थीम 'सद्भावना एंव संवाद' है, पिछली बार 'क्योंकि मिलना जरूरी है' महोत्सव की थीम थी। खुमाड़ का साक्षी स्वंय सहायता समूह इस बार के महोत्सव का मुख्य आयोजक है। साक्षी स्वंय सहायता समूह की अध्यक्षा दीपा देवी ने बताया कि हम महोत्सव के मुख्य आयोजक हैं और तैयारी कर रहे हैं। अन्य समूहों की बहिनो ने हमें पूरे सहयोग का भरोसा दिया है। महिलाओं का इतना उत्साह और उमंग देख अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस बार का महोत्सव कितना भव्य होने वाला है।

अंकिता भण्डारी की हत्या का मामला

फैक्ट फाइंडिंग टीम ने सौंपी अपनी रिपोर्ट

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

देहरादून, 29 अक्टूबर, अंकिता भण्डारी की हत्या और प्रारम्भिक जांच में पाई गई प्रशासनिक लापरवाही तथा शासन के लोगों के लिप्त होने तथा आनन-फानन में सबूतों को नष्ट करने के प्रयासों को देखते हुए उत्तराखंड महिला मंच ने देश भर के जिम्मेदार महिला संगठनों के साथ मिलकर तथ्यान्वेषण के लिए एक टीम गठित की। 6 राज्यों की इस 20 सदस्यीय टीम ने अलग-अलग दलों में बंट कर पौड़ी, श्रीनगर, ऋषिकेश और देहरादून का दौरा किया। इस टीम ने एसआईटी प्रभारी पी रेणुका देवी, राज्य महिला आयोग, डीजीपी उत्तराखंड, पर्यटन सचिव, मुख्य सचिव से वार्ता की तथा केस से संबंधित अपने निष्कर्षों और मांगों को पेश किया।

अपने निष्कर्षों और मांगों को पेश करते हुए टीम ने कहा कि 19 वर्षीय अंकिता भण्डारी के गायब होने की सूचना मिलने पर उसके पिता वीरेंद्र सिंह के लगातार पटवारी पुलिस चौकी, जिलाधिकारी राज्य महिला आयोग, विधान सभा अध्यक्ष से गुहार लगाने पर भी एफआईआर दर्ज होने में 72 घंटे लग गए जबकि किसी भी चौकी/थाना में जीरो एफआईआर दर्ज हो जानी चाहिये थी। इस दल ने ऋषिकेश के वनंतरा रिज़ॉर्ट, चीला वैराज तथा अन्य स्थानों का दौरा करने पर पाया कि रिसॉर्ट अवैध जमीन पर बना हुआ है। जमीन आयुर्वेदिक फैक्ट्री के नाम पर ली गई थी। टीम ने कहा कि हमें यह भी जानकारी मिली कि वहाँ की कर्मचारियों के साथ पहले भी यौन उत्पीड़न हुआ था। वहाँ विशाखा गाइड लाइन या कार्यस्थल पर यौन हिंसा 2013 कानून के तहत कोई भी आंतरिक शिकायत समिति नहीं थी व जिला स्तरीय स्थानीय शिकायत समिति की कोई जानकारी नहीं थी। समितियों का नहीं होना भी अंकिता की मौत का एक कारण है।

टीम ने कहा कि पुलिस और प्रशासन की लापरवाही से कई महत्वपूर्ण साक्ष्य नष्ट हो गए, जैसे-रिसॉर्ट के सील नहीं होने से उसके एक हिस्से पर बुलडोजर चला दिया गया। अंकिता की पोस्टमार्टम टीम में किसी गायनोकोलॉजिस्ट का नहीं होना भी एक बड़ा सवाल है। टीम ने आगे कहा कि हमें डर है कि आरोपी, प्रशासन और सत्ता पक्ष का गठबंधन बचे हुए साक्ष्यों से छेड़छाड़ कर सकता है, गवाहों पर दबाव डाल सकता है और केस को कमजोर कर सकता है।

फैक्ट फाइंडिंग टीम में उत्तराखंड महिला मंच, पीयूसीएल, जनवादी महिला समिति, जनांदोलनों का राष्ट्रीय समन्वय, कर्नाटक विथ बिलकिस, महिला किसान अधिकार मंच, ऐपवा, भारतीय महिला फेडरेशन, छात्र संगठन आईसा, डीएसओ के सदस्य तथा पर्यटन विशेषज्ञ, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता शामिल रहे।

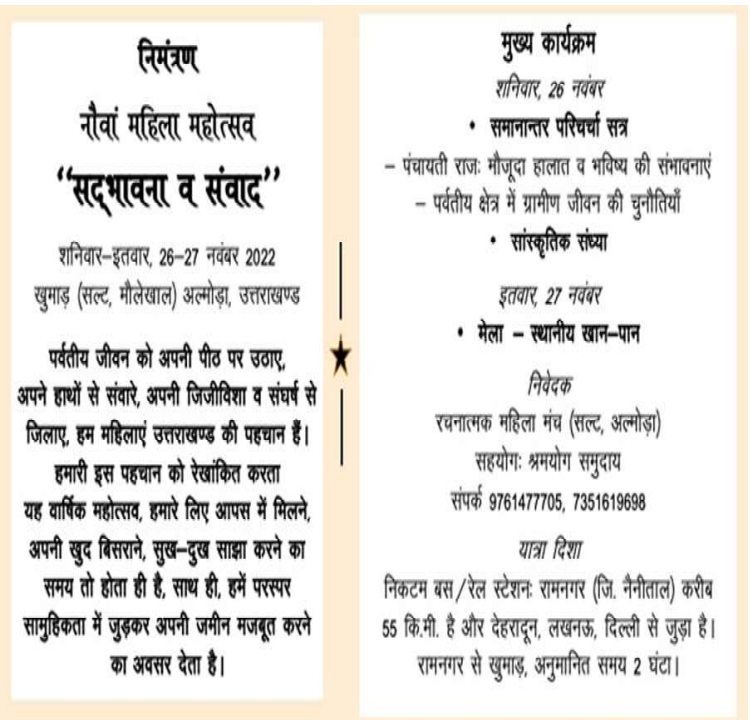

हमारी पाती

श्रमयोग पत्र के आठवें वर्ष का आठवाँ अंक लेकर हम आपके बीच हैं। श्रमयोग समुदाय, रचनात्मक महिला मंच, महिला समूहों व बाल मंचो में श्रमयोग पत्र निरन्तर पढ़ा जा रहा है। श्रमयोग समुदाय के सदस्य, महिलायें व बच्चे पत्र में निरन्तर लिख रहे हैं। इस तरह पढ़ने-लिखने की संस्कृति बन रही है और हम सब मिलकर सामुदायिक पत्रकारिता की मुहीम को लगातार मजबूत कर रहे हैं।

अक्टूबर माह में श्रमयोग के कार्यक्षेत्र में अनेक गतिविधियाँ हुई। रचनात्मक महिला मंच के सदस्य आगामी 26-27 नवम्बर को आयोजित होने वाले महिला महोत्सव को लेकर तैयारियाँ करने लगे हैं। महिला महोत्सव के आयोजन को लेकर मंच में काफी उत्साह है। इस बार एक बड़ा बदलाव यह है कि महोत्सव जो अब तक मुख्य रूप से एक दिनी आयोजन था उसे बढ़ाकर दो दिन का आयोजन किया जा रहा है। 2 अक्टूबर गाँधी जयन्ती पर मंच द्वारा रथखाल बाजार में स्वच्छता अभियान चलाया गया। सितम्बर माह में मंच द्वारा किचन गार्डन हेतु अपनी सदस्याओं को जो बीज उपलब्ध कराये गये थे, अक्टूबर माह में उन्हें बाड़ियों में बो दिया गया है। बीज कोष एकत्र किया जा रहा है। श्रम-उत्पाद का भुगतान किया जा रहा है। खरीफ सीजन के श्रम-उत्पाद के एकत्रीकरण की तैयारियाँ की जा रही हैं। बाल मंचों की गतिविधियाँ जारी हैं।

बीते माहों में उत्तराखण्ड राज्य में एक के बाद एक घटनाएं हुई। पहले हेलंग में मंदोदरी देवी के साथ राजसत्ता की जोर-जबरदस्ती, फिर जातिवादी उन्माद में जगदीश की हत्या, अपराधियों व नेताओं के गठजोड द्वारा अंकिता की हत्या व राजसत्ता द्वारा अपने दलालों के माध्यम से अपने चेहतों को नौकरियाँ बाटने के मामले का पर्दाफास हुआ। इन घटनाओं ने उत्तराखण्ड के लोगों को आहत किया। लोग गुस्से में सड़को पर निकले। परन्तु इन सभी घटनाओं के प्रति राजसत्ता का रवैया बेहद निराशाजनक व लापरवाही से भरा रहा। अब तक सभी मामलों में लीपापोती के सिवाय कुछ नहीं हुआ है।

साथियो, श्रमयोग पत्र के माध्यम से सामुदायिक पत्रकारिता आन्दोलन को मजबूत करने की जिम्मेदारी हम सबके ऊपर है। हम श्रमयोग पत्र का संचालन मुख्य रुप से पाठकों द्वारा अदा किये जाने वाले सदस्यता शुल्क से करते हैं व गैर-लाभकारी समाचार पत्र हैं। पत्र की वार्षिक सदस्यता ₹100 (डाकखर्च सहित) व आजीवन सदस्यता ₹1000 है। आपके द्वारा ग्रहण की गयी पत्र की सदस्यता सामुदायिक पत्रकारिता के उत्थान की इस मुहिम को मजबूत करेगी। बीते वर्षों में आपसे मिले हर तरह के सहयोग के लिये आभार।

जिन्दाबाद!

भीतर के पृष्ठों में

- गांव घर की खबर – पृष्ठ 2
- ढाई आखर – पृष्ठ 3
- कहानी–प्रायश्चित – पृष्ठ 4
- मलेरिया, पीलिया व डेंगू से सावधान – पृष्ठ 5
- कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट – पृष्ठ 6
- मानव सभ्यताओं का ज्ञान–विज्ञान–10 – पृष्ठ 8

मौसम का हाल

मौसम विभाग के अनुसार अक्टूबर माह में उत्तराखण्ड राज्य में औसत 117.6 मीमी वर्षा रिकॉर्ड की गई। जो सामान्य (30.7 मीमी) से बहुत ज्यादा है। राज्य में इस अवधि में सबसे अधिक वर्षा क्रमशः नैनीताल (253.2 मीमी) व उधम सिंह नगर (245.7 मीमी) जिलों मे रिकॉर्ड की गई।

नवम्बर माह-सावधानियाँ

डेंगू का प्रकोप चल रहा है। मच्छरों से बचने के लिये पूरे शरीर को ढकते हुए वस्त्र पहनें। अपने आस-पास मच्छरों को न पनपने दें। पर्वतीय क्षेत्रों में ठण्ड प्रारम्भ हो चुकी है। सुबह-शाम की ठण्ड से बचाव करें। बाहर से घर वापस लौटने पर साबुन से हाथों को धोयें।

नवम्बर माह में विशेष दिवस

01 नवम्बर	–	नव प्रशिक्षुओं की परिचय बैठक
02 नवम्बर	–	खुमाड़ में महोत्सव तैयारी बैठक
09 नवम्बर	–	राज्य स्थापना दिवस
14 नवम्बर	–	बाल दिवस
26 नवम्बर	–	संविधान दिवस
26–27 नवम्बर	–	नवाँ महिला महोत्सव
29 नवम्बर	–	टीम श्रमयोग बैठक दिवस
30 नवम्बर	–	श्रम सखी बैठक दिवस

सम्पादकीय

मंदी की आहट

दुनियाभर के मंदी की गिरफ्त में आने की आशंकाए क्या सच होने जा रही हैं। विश्व अर्थव्यवस्था के मंदी से घिरने की बात करने वाले अर्थशास्त्रियों की सूची लंबी होती जा रही है और अब विश्व बैंक की एक रिपोर्ट ने इस आशंका को और मजबूत कर दिया है जिसमें कहा गया है कि दुनिया भर के केंद्रीय बैंक जिस तेजी से ब्याज दरें बढ़ा रहे हैं उससे 2023 में ग्लोबल अर्थव्यवस्था मंदी की शिकार हो सकती है। आईएमएफने भी कहा कि कई देश पहले से ही अपनी अर्थव्यवस्थाओं पर रुस-यूक्रेन युद्ध के प्रभाव देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने अपने वैश्विक विकास अनुमानों को पहले ही तीन बार घटा दिया है। 2022 के लिए यह 3.2 प्रतिशत और अब 2023 के लिए 2.9 प्रतिशत की वृद्धि की उम्मीद कर रहा है। आईएमएफ़ने कहा कि अमेरिका, यूरोपीय संघ और चीन की अर्थव्यवस्थाओं की हालात ख़राब होती जा रही है और सबसे बुरा दौर आना अभी बाकी है।

विर्श्व बैंक की रिपोर्ट में एक अध्ययन के हवाले से बताया है कि दुनिया की तीन बड़ी अर्थव्यवस्थाएं-अमेरिका, चीन और यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं में तेजी से गिरावट देखी जा रही है। बीते वर्षों में आर्थिक पैकेज के नाम पर बेतहाशा खर्च, चीन में कोविड प्रतिबंधों से सप्लाई चेन को पहुंचे नुकसान और यूक्रेन पर रूस के हमलों ने पेट्रोल-डीजल और खाद्यान्न की बढ़ी कीमतों को शिखर पर पहुंचा दिया है। लिहाजा अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व से लेकर, बैंक ऑफ इंग्लैंड, जापानी केंद्रीय बैंक ने महंगाई को काबू करने के लिए ब्याज दरों को बढ़ा रहे है। चीन के केंद्रीय बैंक ने ब्याज दरें बढ़ाने की तैयारी तो नहीं की है लेकिन उसने ब्याज दरों में कटौती रोक दी है।

बीबीसी की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि मंदी के डर ने नौकरीपेशा लोगों में खौफ़ भर दिया है क्योंकि उनके दिलोदिमाग से अभी तक कोविड के दौर की छंटनी की यादें मिटी नहीं हैं। ग्लोबल अर्थव्यवस्था फिलहाल ऐसे ही हालात की ओर बढ़ रही है। लिहाजा मंदी की मार से नौकरियां जाने की आशंकाओं ने नौकरीपेशा लोगों को डरा दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया की दिग्गज डिलीवरी कंपनी फेडएक्स ने निवेशकों से कहा है कि उसकी पैकेज डिलीवरी में भारी कमी आ सकती है। एशिया और यूरोप में हालात ज्यादा ख़राब होने का अंदेशा है। इससे उसके बिज़नेस ऑपरेशन पर काफी असर होगा। फेडएक्स ने कहा है कि डिमांड में कमी की वजह से कंपनी अपनी सर्विस में कटौती कर सकती है। वो अपने दर्जनों दफ्तर बंद करने की योजना बना रही है। इससे इसके सैकड़ों कर्मचारियों की नौकरियों पर तलवार लटक गई है।

इस मंदी का असर भारत पर कितना होगा यह भविष्य ही बतायेगा। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष यानी आईएमएफ़ ने भारत की आर्थिक विकास दर के अनुमान को साल 2022-23 के लिए 7.4 फीसदी से घटाकर 6.8 फीसदी कर दिया है। आईएमएफ़ ने दूसरी बार अपने अनुमान में कटौती की है।

पाठकों के लिए

श्रमयोग पत्र में अपने प्रिय पाठकों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये **'गांव घर की खबर'** नाम से स्तम्भ प्रकाशित किया जाता है। आप समाज, देश, गांव, खेती, राजनीति, मानव मूल्य आदि किसी भी विषय पर अपनी बेबाक राय हमें भेजें। हमें इसे प्रकाशित करने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे। विचार कभी भी दबाए नहीं जाने चाहिये, इन्हें शब्द रूप दें।

-सम्पादक

श्रमयोग समुदाय की सदस्यता ग्रहण करें।

साथियों श्रमयोग आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही गतिविधियों का संचालन करता है। हम किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्थान से किसी तरह की आर्थिक मदद प्राप्त नही करते है। अत: अपने अन्य साथियों को भी श्रमयोग समुदाय की सदस्यता लेने हेतु प्रेरित करें। सदस्यता शुल्क रू0 200/- वार्षिक है। प्रत्येक सदस्य तक ''श्रमयोग पत्र'' डाक द्वारा निशुल्क भेजा जायेगा। सदस्यता आवेदन पत्र के लिये आप shramyogcommunity@gmail.com पर पत्र भेज सकते है। श्रमयोग की गतिविधियों को जानने के लिये www.shramyog.org को देखें।

गांव घर की खबर

मजबूत महिला सुरक्षा कानून बनाया जाय

निर्मला देवी, अध्यक्षा
रचनात्मक महिला मंच

साथियो नमस्कार!

आशा करती हूँ आप अपने घर परिवार के साथ कुशल होंगे। अक्टूबर माह की बैठकें क्लस्टर इंचार्ज, श्रम सखी व समूह के पदाधिकारी ने अच्छी तरह की। इस बार 14 अक्टूबर को हमारे गाँव में उजाला स्वयं सहायता समूह की मासिक बैठक में अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन से प्रशिक्षणार्थी आये थे। उन्हें बैठक में आ कर बहुत अच्छा लगा। मैं हर बार श्रमयोग पत्र में सबसे पहले अपनी समूह की बैठक के बारे में लिखती हूँ, क्योंकि इस समूह व रचनात्मक महिला मंच ने ही हमें आगे बढ़ने, समाज में बोलने व अपने हक की लड़ाई लड़ने की ताकत दी है। इसी मंच से हमारी पहचान हुई।

पिछले अंक में हमारी बहिन देवकी देवी ने महिलाओं की स्वतंत्रता के बारे में लिखा था कि महिलाओं को आज भी पूरी आजादी नहीं मिली है। यह महत्वपूर्ण बात है। यद्यपि पहले के समाज व आज के समाज में बहुत परिवर्तन हो चुका है। 30 साल पहले लड़कियों को पढ़ाया नहीं जाता था, लेकिन आज लडकियां पढ़ाई कर रही हैं, आगे बढ़ रही हैं। पहले महिला समाज में नहीं जाती थी, आज की महिला यानी हम समाज में जा रहे हैं, बैठक कर रहे हैं, अपने हक के लिए लड़ रहे हैं। आज की लड़किया पढ़ना चाहती हैं, आगे बढ़ना चाहती है, पर दरिंदे उन्हें जीने नहीं दे रहे हैं। अंकिता हत्या कांड ने हमारे समाज को की शर्मसार कर दिया है और सोचने को मजबूर कर दिया है कि हम अपने बच्चों को कैसा समाज दे रहे हैं। सरकार क्यों चुप है। वो क्यों कानून नहीं बनाती? ऐसे कब तक बेटियां ये सब सहती रहेंगी? ये किसी एक धर्म जाति की महिलाओं की बात नहीं है, ये सभी महिलाओं के लिए है, हमें इंसाफ चाहिए। अंकिता हत्या कांड के आरोपियों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। हम सरकार से यह कहना चाहेंगें कि मजबूत महिला सुरक्षा कानून बनाया जाय।

इस बार जब खेती के लिए चातुर मास में बारिश चाहिए थी, तब बारिश नहीं हुई। अब अक्टूबर में बारिश हो रही है। इस कारण इस बार घास काटने का काम देर से शुरू हो पाया। ठंड बढ़ने लगी है। समूहों की सभी सदस्याओं ने अपने-अपने किचन गार्डन में बीज बो दिए है। महिला महोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से चल रही है।

गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छता अभियान

राकेश

रथखाल के क्षमता स्वयं सहायता समूह के सदस्य काफी लम्बे समय से प्लास्टिक कूड़े के कारण परेशान हैं। समूह की सदस्याएं हर बार समूह की मासिक बैठकों में कूड़ेदान को लेकर बात करती हैं। ग्राम प्रधान सुनीता देवी भी समूह की सदस्या हैं। समूह की सदस्याएं बार-बार उनसे भी कूड़े के निपटारे को लेकर चल रही सरकार की नीतियों के बारे में जानती रहती हैं। किन्तु इस बार 2 अक्टूबर के दिन स्वच्छता अभियान चलाने का विचार बना और इसके लिए तैयारियां होने लगी।

सबसे पहले रथखाल का एक दिन निरीक्षण किया गया, जिसमें वाकई हालात काफी खराब दिखे। गधेरे और रास्ते पूरी तरह से कूड़े से भरे पड़े थे, समूह की सदस्याओं का कहना था कि अधिक परेशानी बाहर से आये लोगों के कारण हो रही है, खासकर जो किराये के कमरे में रह रहे हैं और साथ-साथ बाजार का भी पूरा कूड़ा, ऐसे ही फैका जाता है। फिर बात आयी एक बैनर बनाने की जिसे कपड़े पर हाथ से लिखकर बनाया जाना था।

2 अक्टूबर को हम सब लोग जल्दी रथखाल के लिए निकल गये। हमारी पूरी टीम और रचनात्मक महिला मंच की अध्यक्षा निर्मला देवी, गिगड़े कलस्टर की श्रमसखी देवकी देवी, छिड़गा से आशा स्वयं सहायता समूह की सदस्याएं एंव रथखाल की क्षमता स्वयं सहायता समूह की सदस्याएं वहाँ पहुँची। सर्वप्रथम हमने एक स्थान पर बैठने का निर्णय लिया और परिचय एंव जनगीत से बैठक की शुरूआत की गई। बैठक में कैसे इस अभियान को किया जायेगा इसपर चर्चा की गई, फिर पूरे बाजार में रैली निकाली गयी, जिसमें स्वच्छता को लेकर नारे लगाये गये। उसके बाद क्षेत्र के कूड़े को इकट्ठा किया गया। फिर दुबारा बैठकर इससे आगे की योजना पर चर्चा की गयी, जिसमें वन विभाग को भी पत्र लिखने की बात पर जोर दिया गया। साथ-साथ ग्राम प्रधान को अपनी वार्षिक योजना में इसे रखने के लिए कहा गया। आगे की कार्यवाही जारी है।

मोरबी में दुखद हादसा

गुजरात के मोरबी में रविवार (30 अक्टूबर) शाम ब्रिटिशकालीन सस्पेंशन ब्रिज पर लगभग 500 लोग पहुंचे हुए थे। अचानक ब्रिज टूट गया और लोग नदी में गिरने लगे। हादसे में कम से कम 130 लोगों की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार यह ब्रिज लोगों के भारी दबाब के कारण टूटा। इस बात की जानकारी फॉरेंसकि सूत्रों ने दी है। वहीं, करीब 100 लोग अभी भी लापता हैं। गुजरात स्थित कंपनी ओरेवा, जिसने पुल का नवीनीकरण किया था, को मार्च में मोरबी नगर निकाय द्वारा अनुबंध दिया गया था परन्तु इसके लिये निविदा मार्ग नहीं लिया गया था। सूत्रों ने कहा कि देश की शीर्ष फोरेंसिक प्रयोगशाला ने पाया है कि लोगों की भारी भीड़ के कारण पुल ढह गया। फोरेंसिक टीम ने विश्लेषण के लिए भारी कटिंग टूल्स के साथ पुल के धातु के नमूने निकाले।

गुजरात के मोरबी में पुराने पुल के कुछ केबलों को एक कंपनी द्वारा सात महीने के नवीनीकरण के दौरान नहीं बदला गया था। मरने वालों में 47 बच्चों सहित 130 से अधिक लोग मारे गए। जानकारी के अनुसार मच्छु नदी पर बने इस पुल पर 100-150 लोगों के आने की क्षमता थी। हादसे के समय इस पुल पर क्षमता से 5 गुना ज्यादा लोग सवार थे। 100 लोगों की क्षमता वाले पुल पर 400-500 लोग आ गए थे।

यह पुल करीब एक सदी पुराना था और मरम्मत एवं नवीनीकरण कार्य के बाद इसे आमजन के लिए पांच दिन पहले ही खोला गया था। गुजरात के गृह राज्य मंत्री हर्ष संघवी ने मोरबी में संवाददाताओं से कहा कि राज्य सरकार ने इस हादसे की जांच के लिए एक समिति का गठन किया है। प्रत्यक्षदर्शियों ने कहा कि अंग्रेज़ों के समय का यह ''हैंगिंग ब्रिज'' जिस समय टूटा, उस समय उस पर कई महिलाएं और बच्चे मौजूद थे।

22 साल का पहाड़ी राज्य

पूजा च्यौनियाल, ग्राम मैठानी (सल्ट)

कहावत पुरानी है। पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी कभी पहाड़ के काम नहीं आयी। पहाड़ का ऊँची चोटियों से गिरता हुआ पानी नीचे आकर मैदानी क्षेत्र की प्यास बुझाता है और अपने आस-पास की ऊँची पहाड़ियों पर बने गाँवो के सीढ़ीदार खेतों को सूखा ही छोड़ जाता है। देश को कई बड़े राजनेता देने वाला यह पहाड़ी प्रदेश गठन के 22 वर्ष बाद भी विकास के लिए तरस रहा है। रोजगार व शिक्षा के साधन कम होने से युवा पीढ़ी पलायन को मजबूर है।

परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि यहाँ कॉलेज और स्कूल तक पहुँचने के लिए कठिन रास्ता तय करना पड़ता है। ऐसे में प्रदेश में कम पढ़े-लिखे नौजवानों की संख्या बढ़ रही है। फिर भी आगे बढ़ने की चाह और कुछ हद तक गरीबी ने यहाँ के नौजवानों को शहरों की तरफ जाने को मजबूर किया है। उत्तराखंड राज्य को अस्तित्व में आये 22 वर्ष होने को हैं लेकिन स्थानीय नेताओं के पास विकास का ऐसा कोई ठोस मॉडल नहीं है जिससे यहाँ की युवा पीढ़ी को पलायन के लिए मजबूर न होना पड़े।

ढाई आखर..... क्या युद्ध का दंश स्थाई होता है?

बिजू नेगी

दुनिया ने बहुत सारे संकटों, आपदाओं, भुखमरी, त्रासदियों, दो देशों की परस्पर लड़ाईयों के अलावा दो-दो विश्व युद्ध भी देखे हैं-दोनों ही पिछली, एक ही शताब्दी में, 25 सालों के अंतराल में! युद्ध तो युद्ध ही होता है जिसके एक ही तरह के कारण होते हैं-नफरत, वैम्नस्य, संसाधनों पर कब्जा, जागतिक महत्वाकांक्षा, आदि-लेकिन हम इन्हें विश्व युद्ध इसलिए कहते हैं क्योंकि इनमें महाद्वीप स्तर पर, पांच-पांच, छः-छः साल तक लगातार, बहुत सारे देश एक साथ भिड़े, मारा-काटा जिससे एक बहुत बड़े भौगोलिक व जनसांखिकीय स्तर पर तबाही हुई। हमने दोनों युद्धों के बारे में मोटा-मोटा अपनी स्कूली किताबों में पढ़ा है, और हालांकि ये दोनों सीधे-सीधे हमारे युद्ध नही थे, मगर गुलाम देश की हैसियत से ब्रिटेन साम्राज्य की ओर से हमारा देश और हमारे अपने प्रदेश के कई सैनिक भी इनमें शामिल हुए, इसलिए वे हमें याद हैं।

लेकिन हमारे स्मृति पटल पर दूसरे विश्व युद्ध की अमिट छाप है उसकी दहला देने वाली त्रासदी के अहम किरदार, जर्मन शासक अडॉल्फ हिटलर तथा उसकी एक कौम, यहूदी, के प्रति अकल्पनीय नफरत, और उसके फलस्वरूप जर्मन फौज व शासन द्वारा यहूदियों का नरसंहार।

हिटलर की स्पष्ट धारणा थी कि मूल जर्मन, सर्वोच्च जाति आर्य के वंशज हैं और जर्मनी में वह रक्त-शुद्धता बनी रहनी चाहिए। वैसे, यूरोप के अनेक देशों में भी, धर्म के आधार पर, यहूदियों के प्रति आदिकाल से ही गहन भेद का भाव था लेकिन हां, हिटलर ने जरूर उस नफरत को इतना व्यापक व वीभत्स स्वरूप दिया। जर्मनी में नात्जी (या नाज़ी) पार्टी द्वारा चुनावी जीतों के बाद 1933 में सत्ता में आए हिटलर जल्दी ही तानाशाह बन गए। तभी से यहूदियों के खिलाफ व्यापक वैमनस्यता का प्रसार हुआ। उनके लिए अलग नियम-कानून बनने लगे, उनके हाथों पर पट्टे या उनकी कमीजों की छाती पर विशेष निशान लगाए गए जिनसे उनकी पहचान स्पष्ट हो। और फिर उन्हें हजारों की संख्या में ''कॉन्सनट्रेशन'' कैंपों में बंदी रख उनका अमानवीय उत्पीड़न किया गया तथा गैस-चेम्बरों में उनकी सामूहिक, जघन्य हत्याएं की गयीं।

हिटलर का अंहकार व अधिकांश यूरोप पर अपने को सर्वोच्च स्थापित होने के उसके सपने ने उसे युद्ध के शुरू के सालों में विभिन्न मोर्चों पर जीत दिलायी लेकिन फिर धीरे-धीरे विपक्षी देशों की एकजुट सेनाओं के सामने एक-एक कर उसकी हार होने लगी। स्वयं हिटलर का अंत कम विडंबनापूर्ण नहीं रहा-जब दुश्मनों की फौज के बर्लिन के मुहाने पर बढ़ने की खबर के साथ, एक बंकर में छिपे हिटलर ने अपनी प्रेमिका ईवा ब्रॉन से एक रात पहले शादी कर, और रात को ही या अगली सुबह ईवा को मारकर स्वयं आत्महत्या कर ली। यह उनका हार के बाद के समय का भय था, अपने सपने व महत्वकांक्षा के टूटने की निराशा, या अपने अहम का सामना, पता नहीं। क्या उस रात, उस क्षण उन्हें अपने किए का कोई पश्चाताप हुआ होगा, मुझे पता नही।

युद्ध के अंत में दो बातें हुई- एक, यूरोप के विजयी देशों ने मिलकर, पूरे यूरोप के यहुदियों के लिए पश्चिमी एशिया में उनके धर्म की उद्गम भूमि यरुशलम में यहूदियों के आदि देश ''इज़राइल'' की स्थापना की और जहां फिर दुनिया के अन्य देशों से भी कई यहूदी आ के बसे। लेकिन, जब मई 1948 में इज़राइल की स्थापना हुई, वह फिलिस्तीन देश था हालांकि उस पर पहले विश्व युद्ध के बाद से अंग्रेज साम्राज्य था।

दूसरा, उससे इज़राइल व फिलिस्तीन में संघर्ष की शुरूआत हुई जिसमें स0 रा0 अमरीका के साथ विश्व के अधिकांश यूरोपीय देशों द्वारा इज़राइल को पूर्ण आर्थिक व सैनिक सहयोग से, आज फिलिस्तीनी लोग अपनी ही जमीन पर देश-निकाला की स्थिति में हो गए हैं और उनकी वही हालत हो चुकी है जो दूसरे विश्व युद्ध के दौरान यूरोप में यहूदियों की थी।

मेरे मन में दो सवाल हैं- एक, किसी भी युद्ध के बाद लोग अपने-अपने घरों को लौटते हैं, तो दूसरे विश्व युद्ध के बाद यूरोप के अलग-अलग देशों के निवासी व नागरिक यहूदी वापस अपने-अपने देशों में क्यों नही लौटे या उन्हें क्यों नही लौटाया गया? समस्त यूरोप में यहूदियों के प्रति बहुमत दुर्भाव की वजह से क्या उन देशों ने छुटकारा पाने की कोशिश में एक नए देश को जन्म दिया?

हमारा उम्मीद करना स्वाभाविक है कि दूसरे विश्व युद्ध की असीम हिंसा के शिकार यहूदी लोग, आगे अमन व अहिंसा की ही आस करेंगे और उनकी जरूरत व अहमियत को समझेंगे। लेकिन आज इज़राइल के नाते, वे फिलिस्तीनियों के साथ वही (या उस से भी बद) कर रहें हैं जो नात्सी शासन ने उनके साथ किया। तो दूसरा, व ज्यादा अहम सवाल है, ऐसा क्यों? क्या इसलिए कि हिंसा अंततः हमारी इंसानियत को ही खत्म कर देती है?

इनके अलावा, एक और बात बाद के वर्षो में हुई-जर्मनी में नात्सी पार्टी फिर कभी सत्ता में नही आयी, बल्कि उसका वजूद ही खत्म हो गया। और आमजन व जर्मनी की सरकारों में भी युद्ध की उस विभिषिका व उस दौरान की गयी अमानवीयता पर गहन पश्चाताप है।

इस पर चर्चा अगले महीने, मगर इन सवालों व बातों पर आप भी सोचें।

क्या है सामाजिक पूँजी बढ़ाओ अभियान

मजबूत समुदाय आधारित संगठन सामाजिक पूँजी बढ़ाओ अभियान का आधार हैं। श्रमयोग में हमारा विश्वास है कि किसी क्षेत्र में रहने वाले कमजोर व वंचित तबके के लोगों के बीच मजबूत सामाजिक सम्बन्ध उनकी स्थिति में बदलाव की पहली जरूरत हैं। इसलिये हम पिछले 11 वर्षों से स्थानीय समुदायों को स्वयं के समुदाय आधारित संगठनों में संगठित होने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। हमारे कार्यक्षेत्र में महिलाओं व बच्चों के समुदाय आधारित संगठनो के रूप में सामाजिक पूंजी निरन्तर बढ़ रही है और यह सामाजिक पूंजी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और पर्यावरणीय विकास को सुगम बना रही है।

क्या बदले हैं पंचायती राज के हालात

2014 में प्रकाशित श्रमयोग की अध्ययन यात्रा की रिपोर्ट के अंश

उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना के बाद पर्वतीय जिलों में पंचायती राज व्यवस्था पांच-पांच वर्षों के दो कार्यकाल पूरे कर चुकी है। पंचायतों के इन दस वर्षों के कार्यकाल को आधार बना कर श्रमयोग संस्थान द्वारा 16 से 22 दिसम्बर, 2013 तक उत्तराखण्ड में पंचायती राज की वर्तमान हालत को जानने के लिये 7 दिवसीय अध्ययन यात्रा का आयोजन किया गया।

यह यात्रा गूमाखेत, तल्ला झूमाखेत, कुशरानी, बच्छुवाबाण, काने खलपाटी, मटवांस, रिक्कांसी, थला मनराल, ड्यौना भिने इत्यादि पंचायतों में गयी व लगभग 1000 व्यक्तियों ने चर्चा मे भाग लिया। विभिन्न पंचायतों के क्षेत्रों में ग्राम सभा के सदस्यों से लेकर पंचायत प्रतिनिधियों यथा वार्ड मेम्बर, पंचायत प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य व जिला पंचायत सदस्यों से चर्चा की गई। सरकार के पक्ष को समझने लिये खण्ड विकास अधिकारियों व ग्राम विकास अधिकारियों को भी चर्चा में शामिल किया गया।

अध्ययन में निकल कर आये तथ्य चौंकाने वाले हैं। उन्होने उत्तराण्ड में पंचायती राज के हाल को उघाड़ कर रख दिया है। उत्तराखण्ड में पंचायती राज बदहाल है। ज्यादातर जगहों पर पिछले तीन वर्षों में ग्राम सभा की खुली बैठकें नहीं हो सकी हैं। वार्ड मेम्बरों को पंचायतों की मासिक बैठकों के विषय में कोई जानकारी नहीं है। खण्ड विकास कार्यालय स्टाफ की कभी से बुरी तरह जूझ रहे हैं। एक ग्राम विकास अधिकारी 15-20 पंचायतों का कार्य भार सम्भाले किसी तरह पंचायती राज की महान व्यवस्था को ढो रहे हैं। अध्ययन यात्रा के दौरान ऐसे वार्ड मेम्बर मिले जिन्हें यह जानकारी नहीं थी कि उनके पास पिछले पांच वर्षों तक वार्ड मेम्बर पद की जिम्मेदारी थी। संविधान की 11वीं अनुसूची में वर्णित 29 विषय, जिन पर पंचायतों को काम करने का अधिकार है उन पर पंचायत प्रतिनिधियों के पास जानकारी का नितान्त अभाव पाया गया।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी कानून (मनरेगा) मांग आधारित कार्यक्रम है व इसके अन्तर्गत ग्रामीणों को काम मांगने का हक है इस विषय पर ग्राम सभा के सदस्य अनभिज्ञ पाये गये। जिस वजह से कई पंचायतों में ग्रामीण परिवारों को पिछले पांच वर्षो में 500 दिनों की जगह पर सिर्फ 15-20 दिन का रोजगार मिल पाया है। ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत व जिला पंचायत के बीच संम्बन्धों व उनकी जिम्मेदारियों पर ग्राम सभा के सदस्य अनभिज्ञ पाये गये। अतः श्रमयोग इस अध्ययन यात्रा के परिणामों के आधार पर राज्य में जन समुदायों के साथ मिलकर पंचायती राज के सशक्तिकरण हेतु अभियान प्रारम्भ कर रहा है।

यह अभियान आगे चल कर श्रम-जन स्वराज अभियान के रुप में सामने आया।

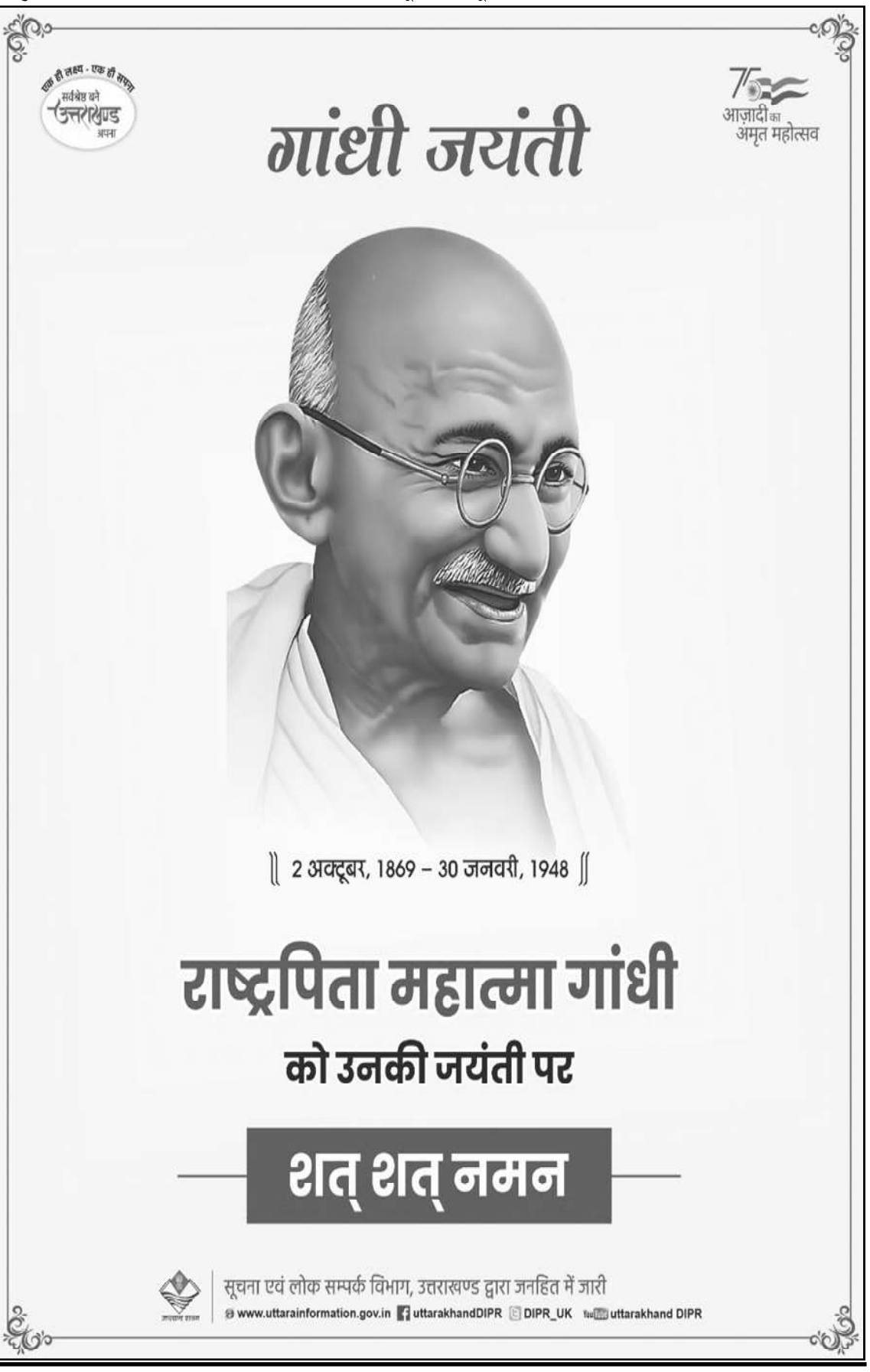

पद्म भूषण भगवतीचरण वर्मा हिन्दी साहित्य जगत के प्रसिद्ध साहित्यकार रहे। उन्हें पत्रकार व उपन्यासकार के रुप में जाना जाता है। उन्होंने अनेक कहानियाँ व कविताएं भी लिखी। प्रायश्चित कहानी उनके द्वारा लिखी गई एक प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में उन्होंने समाज में व्याप्त रुढ़ियों व अन्धिवश्वास पर गहरी चोट की है।

प्रायश्चित

अगर कबरी बिल्ली घर भर में किसी से प्रेम करती थी, तो रामू की बहू से, और अगर रामू की बहू घर भर में किसी से घृणा करती थी, तो कबरी बिल्ली से। रामू की बहू, दो महीने हुए मायके से प्रथम बार ससुराल आई थी, पति की प्यारी और सास की दुलारी, चौदह वर्ष की बालिका। भंडार-घर की चाभी उसकी करधनी में लटकने लगी, नौकरों पर उसका हुक्म चलने लगा, और रामू की बहू घर में सब कुछ। सासजी ने माला ली और पूजा-पाठ में मन लगाया।

लेकिन ठहरी चौदह वर्ष की बालिका, कभी भंडार-घर खुला है, तो कभी भंडार-घर में बैठे-बैठे सो गई। कबरी बिल्ली को मौका मिला, घी-दूध पर अब वह जुट गई। रामू की बहू की जान आफ्त में और कबरी बिल्ली के छक्के पंजे। रामू की बहू हांडी में घी रखते-रखते ऊंघ गई और बचा हुआ घी कबरी के पेट में। रामू की बहू दूध ढककर मिसरानी को जिंस देने गई और दूध नदारद। अगर बात यहीं तक रह जाती, तो भी बुरा न था, कबरी रामू की बहू से कुछ ऐसा परच गई थी कि रामू की बहू के लिए खाना-पीना दुश्वार। रामू की बहू के कमरे में रबड़ी से भरी कटोरी पहुंची और रामू जब आए तब तक कटोरी साफ चटी हुई। बाजार से बालाई आई और जब तक रामू की बहू ने पान लगाया बालाई गायब।

रामू की बहू ने तय कर लिया कि या तो वही घर में रहेगी या फिर कबरी बिल्ली ही। मोर्चाबंदी हो गई, और दोनों सतर्क। बिल्ली फंसाने का कठघरा आया, उसमें दूध मलाई, चूहे, और भी बिल्ली को स्वादिष्ट लगने वाले विविध प्रकार के व्यंजन रखे गए, लेकिन बिल्ली ने उधर निगाह तक न डाली। इधर कबरी ने सरगर्मी दिखलाई। अभी तक तो वह रामू की बहू से डरती थी पर अब वह साथ लग गई, लेकिन इतने फासिले पर कि रामू की बहू उस पर हाथ न लगा सके। कबरी के हौसले बढ़ जाने से रामू की बहू को घर में रहना मुश्किल हो गया। उसे मिलती थीं सास की मीठी झिड़कियां और पतिदेव को मिलता था रूखा-सूखा भोजन।

एक दिन रामू की बहू ने रामू के लिए खीर बनाई। पिस्ता, बादाम, मखाने और तरह-तरह के मेवे दूध में औटाए गए, सोने का वर्क चिपकाया गया और खीर से भरकर कटोरा कमरे के एक ऐसे ऊंचे ताक पर रखा गया, जहां बिल्ली न पहुंच सके। रामू की बहू इसके बाद पान लगाने में लग गई। उधर बिल्ली कमरे में आई, ताक के नीचे खड़े होकर उसने ऊपर कटोरे की ओर देखा, सूंघा, माल अच्छा है, ताक की ऊंचाई अंदाजी. उधर रामू की बहू पान लगा रही है। पान लगाकर रामू की बहू सासजी को पान देने चली गई और कबरी ने छलांग मारी, पंजा कटोरे में लगा और कटोरा झनझनाहट की आवाज के साथ फर्श पर। आवाज रामू की बहू के कान में पहुंची, सास के सामने पान फेंककर वह दौड़ी, क्या देखती है कि फूल का कटोरा टुकड़े-टुकड़े, खीर फर्श पर और बिल्ली डटकर खीर उड़ा ही है। रामू की बहू को देखते ही कबरी चंपत।

रामू की बहू पर खून सवार हो गया, न रहे बांस, न बजे बांसुरी, रामू की बहू ने कबरी की हत्या पर कमर कस ली। रात-भर उसे नींद न आई, किस दांव से कबरी पर वार किया जाए कि फिर जिंदा न बचे, यही पड़े-पड़े सोचती रही। सुबह हुई और वह देखती है कि कबरी देहरी पर बैठी बड़े प्रेम से उसे देख रही है।

रामू की बहू ने कुछ सोचा, इसके बाद मुस्कुराती हुई वह उठी। कबरी रामू की बहू के उठते ही खिसक गई। रामू की बहू एक कटोरा दूध कमरे के दवाजे की देहरी पर रखकर चली गई। हाथ में पाटा लेकर वह लौटी तो देखती है कि कबरी दूध पर जुटी हुई है। मौका हाथ में आ गया, सारा बल लगाकर पाटा उसने बिल्ली पर पटक दिया। कबरी न हिली, न डुली, न चीखी, न चिल्लाई, बस एकदम उलट गई। आवाज जो हुई तो महरी झाड़ू छोड़कर, मिसरानी रसोई छोड़कर और सास पूजा छोड़कर घटनास्थल पर उपस्थित हो गईं। रामू की बहू सर झुकाए हुए अपराधिनी की भांति बातें सुन रही है।

महरी बोली,'अरे राम! बिल्ली तो मर गई, मांजी, बिल्ली की हत्या बहू से हो गई, यह तो बुरा हुआ।

मिसरानी बोली,'मांजी, बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या बराबर है, हम तो रसोई न बनावेंगी, जब तक बहू के सिर हत्या रहेगी।

सासजी बोलीं,'हां, ठीक तो कहती हो, अब जब तक बहू के सर से हत्या न उतर जाए, तब तक न कोई पानी पी सकता है, न खाना खा सकता है। बहू, यह क्या कर डाला?

महरी ने कहा, 'फिर क्या हो, कहो तो पंडितजी को बुलाय लाई।

सास की जान-में-जान आई, 'अरे हां, जल्दी दौड़ के पंडितजी को बुला लो।

बिल्ली की हत्या की खबर बिजली की तरह पड़ोस में फैल गई-पड़ोस की औरतों का रामू के घर तांता बंध गया। चारों तरफसे प्रश्नों की बौछार और रामू की बहू सिर झुकाए बैठी। पंडित परमसुख को जब यह खबर मिली, उस समय वे पूजा कर रहे थे। खबर पाते ही वे उठ पड़े। पंडिताइन से मुस्कुराते हुए बोले, 'भोजन न बनाना, लाला घासीराम की पतोहू ने बिल्ली मार डाली, प्रायश्चित होगा, पकवानों पर हाथ लगेगा।

पंडित परमसुख चौबे छोटे और मोटे से आदमी थे। लंबाई चार फीट दस इंच और तोंद का घेरा अट्ठावन इंच चेहरा गोल-मटोल, मूंछ बड़ी-बड़ी, रंग गोरा, चोटी कमर तक पहुंचती हुई।

कहा जाता है कि मथुरा में जब पंसेरी खुराकवाले पंडितों को ढूंढ़ा जाता था, तो पंडित परमसुखजी को उस लिस्ट में प्रथम स्थान दिया जाता था। पंडित परमसुख पहुंचे और कोरम पूरा हुआ। पंचायत बैठी-सासजी, मिसरानी, किसनू की मां, छन्नू की दादी और पंडित परमसुख। बाकी स्त्रियां बहू से सहानुभूति प्रकट कर रही थीं।

किसनू की मां ने कहा, 'पंडितजी, बिल्ली की हत्या करने से कौन नरक मिलता है?'

पंडित परमसुख ने पत्रा देखते हुए कहा, 'बिल्ली की हत्या अकेले से तो नरक का नाम नहीं बतलाया जा सकता, वह महूरत भी मालूम हो, जब बिल्ली की हत्या हुई, तब नरक का पता लग सकता है।

'यही कोई सात बजे सुबह' मिसरानीजी ने कहा।

पंडित परमसुख ने पत्रे के पन्ने उलटे, अक्षरों पर उंगलियां चलाईं, माथे पर हाथ लगाया और कुछ सोचा। चेहरे पर धुंधलापन आया, माथे पर बल पड़े, नाक कुछ सिकुड़ी और स्वर गंभीर हो गया, 'हरे कृष्ण! हे कृष्ण! बड़ा बुरा हुआ, प्रात:काल ब्रह्म-मुहूर्त में बिल्ली की हत्या! घोर कुंभीपाक नरक का विधान है! रामू की मां, यह तो बड़ा बुरा हुआ। रामू की मां की आंखों में आंसू आ गए, 'तो फिर पंडितजी, अब क्या होगा, आप ही बतलाएं!

पंडित परमसुख मुस्कुराए, 'रामू की मां, चिंता की कौन सी बात है, हम पुरोहित फिर कौन दिन के लिए हैं? शास्त्रों में प्रायश्चित का विधान है, सो प्रायश्चित से सब कुछ ठीक हो जाएगा। रामू की मां ने कहा, 'पंडितजी, इसीलिए तो आपको बुलवाया था, अब आगे बतलाओ कि क्या किया जाए!' 'किया क्या जाए, यही एक सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दी जाए. जब तक बिल्ली न दे दी जाएगी, तब तक तो घर अपवित्र रहेगा। बिल्ली दान देने के बाद इक्कीस दिन का पाठ हो जाए।

छन्नू की दादी बोली, 'हां और क्या, पंडितजी ठीक तो कहते हैं, बिल्ली अभी दान दे दी जाए और पाठ फिर हो जाए।

रामू की मां ने कहा, 'तो पंडितजी, कितने तोले की बिल्ली बनवाई जाए?'

पंडित परमसुख मुस्कुराए, अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, 'बिल्ली कितने तोले की बनवाई जाए? अरे रामू की मां, शास्त्रों में तो लिखा है कि बिल्ली के वजन भर सोने की बिल्ली बनवाई जाए, लेकिन अब कलियुग आ गया है, धर्म-कर्म का नाश हो गया है, श्रद्धा नहीं रही। सो रामू की मां, बिल्ली के तौलभर की बिल्ली तो क्या बनेगी, क्योंकि बिल्ली बीस-इक्कीस सेर से कम की क्या होगी. हां, कम-से-कम इक्कीस तोले की बिल्ली बनवा के दान करवा दो, और आगे तो अपनी-अपनी श्रद्धा। रामू की मां ने आंखें फाड़कर पंडित परमसुख को देखा, 'अरे बाप रे, इक्कीस तोला सोना! पंडितजी यह तो बहुत है, तोलाभर की बिल्ली से काम न निकलेगा?

पंडित परमसुख हंस पड़े, 'रामू की मां! एक तोला सोने की बिल्ली! अरे रुपया का लोभ बहू से बढ़ गया? बहू के सिर बड़ा पाप है, इसमें इतना लोभ ठीक नहीं! मोल-तोल शुरू हुआ और मामला ग्यारह तोले की बिल्ली पर ठीक हो गया। इसके बाद पूजा-पाठ की बात आई। पंडित परमसुख ने कहा, 'उसमें क्या मुश्किल है, हम लोग किस दिन के लिए हैं, रामू की मां, मैं पाठ कर दिया करुंगा, पूजा की सामग्री आप हमारे घर भिजवा देना।

'पूजा का सामान कितना लगेगा?'

'अरे, कम-से-कम में हम पूजा कर देंगे, दान के लिए करीब दस मन गेहूं, एक मन चावल, एक मन दाल, मन-भर तिल, पांच मन जौ और पांच मन चना, चार पसेरी घी और मन-भर नमक भी लगेगा। बस, इतने से काम चल जाएगा।' अरे बापरे, इतना सामान! पंडितजी इसमें तो सौ-डेढ़ सौ रुपया खर्च हो जाएगा' रामू की मां ने रुआंसी होकर कहा।

'फिर इससे कम में तो काम न चलेगा। बिल्ली की हत्या कितना बड़ा पाप है, रामू की मां! खर्च को देखते वकत पहले बहू के पाप को तो देख लो! यह तो प्रायश्चित है, कोई हंसी-खेल थोड़े ही है-और जैसी जिसकी मरजादा! प्रायश्चित में उसे वैसा खर्च भी करना पड़ता है। आप लोग कोई ऐसे-वैसे थोड़े हैं, अरे सौ-डेढ़ सौ रुपया आप लोगों के हाथ का मैल है।

पंड़ित परमसुख की बात से पंच प्रभावित हुए, किसनू की मां ने कहा, 'पंडितजी ठीक तो कहते हैं, बिल्ली की हत्या कोई ऐसा-वैसा पाप तो है नहीं-बड़े पाप के लिए बड़ा खर्च भी चाहिए।' छन्नू की दादी ने कहा, 'और नहीं तो क्या, दान-पुन्न से ही पाप कटते हैं-दान-पुन्न में किफायत ठीक नहीं। मिसरानी ने कहा, 'और फिर मांजी आप लोग बड़े आदमी ठहरे। इतना खर्च कौन आप लोगों को अखरेगा। रामू की मां ने अपने चारों ओर देखा-सभी पंच पंडितजी के साथ। पंडित परमसुख मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने कहा, 'रामू की मां! एक तरफ तो बहू के लिए कुंभीपाक नरक है और दूसरी तरफ तुम्हारे जिम्मे थोड़ा-सा खर्चा है. सो उससे मुंह न मोड़ो।

एक ठंडी सांस लेते हुए रामू की मां ने कहा, 'अब तो जो नाच नचाओगे नाचना ही पड़ेगा।

पंडित परमसुख जरा कुछ बिगड़कर बोले, 'रामू की मां! यह तो खुशी की बात है-अगर तुम्हें यह अखरता है तो न करो, मैं चला' इतना कहकर पंडितजी ने पोथी-पत्रा बटोरा।

'अरे पंडितजी-रामू की मां को कुछ नहीं अखरता-बेचारी को कितना दुख है-बिगड़ो न!' मिसरानी, छन्नू की दादी और किसनू की मां ने एक स्वर में कहा।

रामू की मां ने पंडितजी के पैर पकड़े-और पंडितजी ने अब जमकर आसन जमाया।

'और क्या हो?'

'इक्कीस दिन के पाठ के इक्कीस रुपए और इक्कीस दिन तक दोनों बखत पांच-पांच ब्राह्मणों को भोजन करवाना पड़ेगा, कुछ रुककर पंडित परमसुख ने कहा, 'सो इसकी चिंता न करो, मैं अकेले दोनों समय भोजन कर लूंगा और मेरे अकेले भोजन करने से पांच ब्राह्मण के भोजन का फल मिल जाएगा।

'यह तो पंडितजी ठीक कहते हैं, पंडितजी की तोंद तो देखो!' मिसरानी ने मुस्कुराते हुए पंडितजी पर व्यंग्य किया।

'अच्छा तो फिर प्रायश्चित का प्रबंध करवाओ, रामू की मां ग्यारह तोला सोना निकालो, मैं उसकी बिल्ली बनवा लाऊं-दो घंटे में मैं बनवाकर लौटूंगा, तब तक सब पूजा का प्रबंध कर रखो-और देखो पूजा के लिए। पंडितजी की बात खतम भी न हुई थी कि महरी हांफती हुई कमरे में घुस आई और सब लोग चौंक उठे। रामू की मां ने घबराकर कहा, 'अरी क्या हुआ री?

महरी ने लड़खड़ाते स्वर में कहा, 'मांजी, बिल्ली तो उठकर भाग गई!'

नीली धारियों वाला स्वेटर

गोविन्द माथुर

कैसी भी रही हो ठण्ड
ठिठुरा देने वाली या गुलाबी
एक ही स्वेटर था मेरे पास
नीली धारियों वाला
बहिन के स्वेटर बुनने से पहले
किसी की उतरी हुई जाकेट
पहनता था मैं
जाकेट में गर्माहट थी
पर जाकेट पहन कर
खुशी नहीं मिलती थी मुझे
एक उदासी छा जाती थी
मेरे चेहरे पर
बहिन मेरे चेहरे पर छाई
उदासी पढ़ कर
खुद भी उदास हो जाया करती थी
बहिन ने थोड़े-थोड़े पैसे बचा कर
खरीदे सफेद नीले ऊन के गोले
एक सहेली से मांग लाई सलाई
किसी पत्रिका के बुनाई विशेषांक से
सीखी बुनाई
दो उल्टे एक सीधा
एक उल्टा दो सीधे डाले फंदे
कई दिनों तक नापती रही
मेरा गला और लम्बाई
गिनती रही फंदे
बदलती रही सलाई
ठिठुराती ठण्ड आने से पहले
एक दिन बहिन ने
पहना दिया मुझे नया स्वेटर
बहिन की उंगलियों की ऊष्मा
समां गई थी स्वेटर में
मेरे चेहरे पर आई चमक
देख खुश थी बहिन
मेरा स्वेटर देख कर
लड़कियाँ पूछती थी
कलात्मक बुनाई के बारे में
बहिन के ससुराल जाने बाद भी
कई वर्षो तक पहनता रहा मैं
नीली धारिओं वाला स्वेटर
उस स्वेटर जैसी ऊष्मा
फिर किसी स्वेटर में नहीं मिली
उस स्वेटर की स्मृति में
आज भी ठण्ड नहीं लगती मुझे

कविता कोश से साभार

यह आलेख अक्टूबर माह के अंक में भी प्रकाशित किया गया था परन्तु वर्तमान में मलेरिया, पीलिया, चिकिन गुनिया व डेंगू के प्रकोप की वजह से इसे पुनः प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है।

-सम्पादक

मलेरिया, पीलिया, चिकिन गुनिया व डेंगू से सावधान

डा0 वन्दना, बैगलुरु

मलेरिया-

लक्षण- तेज कंपकंपी छूटने के साथ तेज सिरदर्द और तेज बुखार कंपकंपी बहुत तेज होती है। इसके अंतराल से बुखार आता है।

कारण- एनाफिलिज नामक मच्छर इस बीमारी के होने का करण है। काटने के 14 दिन के बाद तेख बुखार हो जाता है। ये मच्छर बरसात के इकट्ठे पानी में पनपते हैं

बचाव- मच्छर से बचाव के साधन अपनाने चाहिए। मच्छर दानी, मशीन, क्रीम का उपयोग करना चाहिए। आस-पास पानी को इक्ट्ठा नहीं होने देना चाहिए। यदि हो और जिसे साफ न किया जा सके तो किटनाशक या मिट्टी का तेल उस पर डाल देना चाहिए।

उपचार- फूली हुई फिटकरी के चूर्ण में चार गुना पीसी हुई खांड या चीनी अच्छी तरह मिला लें, दो ग्राम की मात्रा गुनगुने पानी से दो-दो घंटे बाद तीन बार लें। यह दवा कुनैन से भी अधिक लाभदायक हैं और किसी प्रकार गर्मी खुश्की नहीं करती।

सावधानी - गर्भवती महिला को यह औषधि कदापि न दें।

विकल्प- तुलसी के सात पत्तियाँ और काली मिर्च के सात दाने एक साथ मिलाकर चबाने से पांच बार में मलेरिया जड़ से चला जाता है। दिन में तीन बार लें।

विषेष- तुलसी की चार पत्तियाँ और चार काली मिर्च रोज खाने में मौसमी बुखार भी दूर होता है।

खास दवा- भुना नमक- सादा खाने का नमक पिसा हुआ लेकर तवे पर (धीमी आंच पर) इतना सेंके कि उसका रंग काला भूरा (कॉफी के समान) हो जाए। ठण्डा होने पर शीशी में भर लें, दवा तैयार करने से पहले, एक चम्मच नमक, एक गिलास गर्म पानी में मिलाकर लें तथा ज्वर उतर जाने पर भी ऐसे ही लेना जरूरी है। दो - इस दवा का वास्तविक लाभ भूखे पेट सेवन करने से ही होता है। इसलिए सेवन हमेशा खाली पेठ ही करना चाहिए।

पीलिया-

लक्षण- यदि हल्का बुखार आता हो, भूख नही लगती हो, खाना देखने या मुह में रखने से उबकाई आती हो या उल्टी आ जाती हो, पेशाब गहरे पीले रंग का आ रहा हो। थकान, नींद आ रही हो, आँखें और नाखून पिले दिखते हों, तो ये सब पीलिया के लक्षण हैं। बरसात के मौसम में पीलिया होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

कारण- मल-मूत्र के विस्तारण की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने कारण, बरसात में पीने का पानी बिना उबाले या बिना फिल्टर किए उपयोग करने पर ये हो सकता है। सिर्फक्लोरीन से पानी को उपचारित करने से इस रोग के कीटाणु नष्ट नहीं होते हैं दूषित खाद्य सामाग्री को सेवन करने के कारण, रक्त चढ़ाये जाने के कारण, इन सब कारणों से कीटाणु शरीर मे प्रवेश कर लीवर पर हमला कर देते है। लीवर के रोगग्रस्त होने के कारण रक्त में बिलीरूबिन की मात्रा बढ़ जाती है इससे शरीर के अंग पीले दिखाई देते हैं।

उपचार - पीपल वृक्ष के तीन-चार नए पत्ते (कोपले) पानी से साफ करके, मिश्री या चीनी के साथ खरल में खूब घोटें या सिल पर बारीक पीस लें एक गिलास पानी में घोलकर किसी स्वच्छ कपड़े से छान लें।

यह पीपल के पत्तों का शर्बत रोगी को दिन में दो बार पिलाएं। आवश्यकतानुसार तीन दिन से सात दिन तक दें। पीलीया खत्म हो जाएगा। मूली के पत्तों और टहनियों का रस 40 ग्राम में 10 ग्राम मिश्री मिलाकर प्रातः खाली पेट पीने से सब प्रकार के पीलिया में लाभ होता है और इससे एक सप्ताह में पीलिया रोग दूर होता है। लिव-52 की टेबलेट्स 2 गोली दिन में तीन बार लेने से पीलिया में लाभ मिलता है।

संतरे निराहार मुख दो संतरे रोज खाने या संतरे का रस पीने से 5-7 दिन मे रोग खत्म हो जाता है। पोदीने का रस निकालकर सुबह चीनी मिलाकर पीना पीलिया में गुणकारी है, दस दिन लें।

विशेष - पीलिया में हल्का, उबला हुआ सुपाच्य भोजन एक बार में थोड़ी मात्रा में ले। पूर्ण विश्राम करें। स्वच्छ, शीतल हवादार कमरे में रहें।

मूली और उसके पत्तों की उबाल कर सब्जी बना कर उसका सेवन करें। पूरे दिन में 7-8 बार ग्लूकोज एक ग्लास साफ पानी में मिलाकर कर लें। पानी को अच्छे से उबाल कर ठंडा करके साफ बरतन में रखें। ज्वर सही हो जाने पर भी पीलिया में 3-4 महीने तक खान-पान का परहेज करना अतिआवश्यक है। अतः परहेज में ज्यादा तड़के वाला, तला-भुना खाना न लें। सादा उबला खाना ही लें। पानी उबला ही पिए, बाहर का खान-पान कुछ न लें। लिव- 52 टेबलेट्स या सिरप लेते रहें और ग्लूकोज भी लेते रहें।

चिकिन गुनिया-

लक्षण- 102.2 फा0 तक का ज्वर होता है।

धड और फिर हाथों एवं पैरों पे चकते बन जाना। शरीर के विभिन्न जोड़ों में पीड़ा होना शामिल है। सिर दर्द, प्रकाश से भय लगना, आँखों में पीड़ा भी होती है। ज्वर आम तौर पर दो से ज्यादा दिन नहीं चलता तथा अचानक समाप्त होता है, लेकिन अन्य लक्षण जिसमें अनिद्रा तथा निर्बलता भी शामिल है। रोगियों को लम्ब समय तक जोड़ो की पीड़ा हो सकती हैं जो उनकी उम्र पर निर्भर करती है।

कारण - यह रोग मानव-मच्छर-मानव के चक्र में फैलता है। जब चिकिनगुनिया से ग्रसित किसी आदमी को कोई मच्छर काटता है और फिर वही मच्छर किसी स्वस्थ आदमी काट होता है तो उस व्यक्ति को भी बीमारी हो जाती है। कुछ प्रजातियों की मादा मच्छर इस बिमारी को फैलाती हैं, ये दिन में काटते है।

सावधानी- चिकनगुनिया, व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को केवल मच्छरों के काटने से फैल सकता है। इसलिए जहाँ तक हो सके मच्छरों के काटने से बचे। घर में या आस-पास पानी इक्कठा न होने दे। मच्छरदानी का प्रयोग करें, दिन के समय भी ध्यान रखें, इसका मच्छर दिन में ही काटता है। मछर भगाने वाली मशीन का इस्तमाल करे। ऐसे कपड़े पहने जो शरीर का अधिक से अधिक भाग ढक सकें।

उपचार- तुलसी का प्रयोग इस बीमारी के लिए अमृत के समान है, नीम, गिलोय, सोंठ, छोटी पीपर और गुड़ व तुलसी का काढा बनाकर पीने से इसका इलाज संभव है।

डेंगू-

लक्षण व कारण- डेगू एडीज इजिप्टी मच्छरों के काटने से होता है, यह रोग अचानक तीव्र ज्वर के साथ शुरू होता है, जिसके साथ-साथ तेज सिर दर्द होता है। मांसपेशियों तथा जोड़ों में भयानक दर्द होता है जिसके चलत ही इसे हड्डी तोड़ बुखार कहते हैं। इसके अलावा शरीर पर लाल चकते भी बन जाते है। जो सबसे पहले पैरों पे फिर छाती पर तथा कभी-कभी सारे शरीर पर फैल जाते हैं। पेट खराब होना, पेट में दर्द, कमजोरी, दस्त, चक्कर आना, भूख न लगना भी लक्षण हैं। जब तक रोगी का तापक्रम सामान्य नहीं होता है तब तक उसके रक्त में प्लेटलेटस की संख्या कम रहती है।

उपचार - डेगू के दौरान आपको सही से आराम करने और बहुत सारे पेय पदार्थ पीने की सलाह दी जाती है। गिलोय के तनों को उबालकर काढ़ा बनाकर उसका सेवन करना चाहिए, इसके साथ तुलसी के पत्तो और अदरक, भी डाला जा सकता है,

मेथी के पत्ते बुखार कम करने और रोगी का दर्द कम करने में सहायक होते है। मेथी पाउडर को भी पानी मे मिला कर पी सकते है। पपीते के पत्ते प्लेटलेट्स की गिनती बढ़ाने मे मदद करते हैं। साथ ही दर्द, उबकाई, थकान आदि को भी कम करते है। पत्तों को कूट कर खा सकते है या फिर इन्हें ड्रिंक की तरह भी पिया जा सकता है।

टाइफाइड-

लक्षण- नियमित बढ़ने वाला तेज बुखार। बदन दर्द, कमजोरी, सिर व पेट दर्द। कम भूख लगना। बच्चों में दस्त की शिकायत। बडों में कब्ज की शिकायत। बीमारी अधिक बढ़ जाने पर आतों में अल्सर हो सकता है।

कारण- यह बुखार Salmonella Typhi नाम, के बैक्टीरिया के कारण होने वाला संक्रामक रोग है। इस बुखार का फैलाव संक्रमित पानी और खाद्य पदार्थ से होता है। टाइफाइड बुखार दूषित पानी से नहाने से और खाद पदार्थ धोकर न खाने से फैलता है। इसका बैक्टीरिया कई हफ्तों जीवित रह सकता है, टाइफाइड बुखार से पीड़ित व्यक्ति के झूठे खाने पिने से भी यह हो सकता है।

उपचार - किसी कपड़े को एक भाग सिरका (सेव का) और दो भाग पानी लेकर उसमें भिगोऐं। अतिरिक्त पानी को निचोड़ दें और इस पट्टी को माथे और पेट पर रखें। एक पट्टी पैर के तलवों पर भी रखी जा सकती है। लहसुन की कली को पीसकर गरम पानी में मिलाऐं, 10 मिनट ढक कर रखें। पानी को छान लें और घूंट-घूंट करके धीरे धीरे पीएं। एक दिन में इस पेय को दो बार पीए।

लौंग के तेल में Antibacterial गुण होते हैं जो कि बैक्टीरिया को मार देते हैं। पानी को लौंग डालकर उबाल ले। जब पानी आधा रह जाए तो इस छान लें, इस पानी को पूरा दिन पीए, इस उपचार को पूरे हफ्ते लगातार करें। दालचीनी का चूर्ण एक चुटकी (आधा से एक ग्राम) दो चम्मच शहद में मिलाकर दिन में दो बार चाटने से टाइफाइड रोग से बचा जा सकता हैं।

चन्द बातों का ध्यान रखकर आप निरोगी रहकर जीवन का भरपूर आनन्द ले सकते हैं।

अपने घर और आस-पास सफाई रखें, कहीं भी पानी इक्ठ्ठा न होने दें। मच्छरों से बचाव के लिए मच्छर दानी, मशीनों और ओडोमास, क्रीम आदि का प्रयोग करें। दिन में भी मच्छरों से अपना बचाव करें। ठंड व भीगने से बचें, कपड़े गीले हो जाने की अवस्था में तुरंत कपड़े बदल लें। साफ पानी से नहाए और अन्य दैनिक कार्य पूर्ण करें। उबाल कर व छानकर पानी का प्रयोग करें। खान-पान सादा चीजो का रखें। बाहर के खाने-पीने की चीजो का प्रयोग न करें। खाने को साफ बर्तनों में ढक कर रखें। शौचालयों का प्रयोग करें तथा शौच के बाद हाथों को अच्छे से धोऐं। खाने से पहले अच्छे से हाथों को अवश्य धोऐं। मन प्रसन्न रखें और और आने वाले ठंडक के मौसम का लुफ्त उठाएं।

गले की खराश से राहत दिला सकते हैं घर में तैयार ये पेय

बदलते मौसम के दौरान सर्दी, खांसी और गले में खराश जैसी कई समस्याएं होने की संभावना बढ़ जाती है। खासकर, गले में खराश और खुजली के कारण खान-पान की चीजों को निगलने में मुश्किल होती है और गले में दर्द भी होने लगता है। इसलिए आज हम आपको कुछ ऐसे घरेलू पेय के बारे में बताने जा रहे हैं। जिनका सेवन आपको इन समस्याओं से राहत दिलाने के साथ-साथ कई तरह के स्वास्थ्य लाभ देने में सक्षम है।

अदरक की चाय- एंटी बैक्टीरियल और एंटी इंफ्लेमेटरी गुणों से भरपूर अदरक की चाय गले की खुजली और खराश को शांत करने में सहायक है। एक अध्ययन के अनुसार, गर्म पानी में ताजे अदरक का रस मिलाकर पीने से आपको कई तरह के संक्रमण समेत गले की खराश से छुटकारा मिल सकता है। लाभ के लिए गर्म पानी में कदूकस किया हुआ अदरक डालें और उबाल आने दें। अब इस चाय को छानकर उसमें स्वादानुसार शहद मिलाकर सेवन करें।

हल्दी वाला दूध- दूध में हल्दी मिलाकर पीने से भी गले की खराश और खुजली से राहत मिल सकती है। दूध और हल्दी में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-माइक्रोबियल प्रभाव पाए जाते हैं, जो गले को आराम पहुंचाने में सहायक हो सकते हैं। इसलिए जब तक आपको ये समस्याएं हों, तब तक एक गिलास हल्के गर्म दूध में आधा चम्मच हल्दी मिलाकर पीएं। इससे आपको जल्द ही आराम मिलेगा।

गर्म पानी में शहद और नींबू का रस मिलाएं- शहद में मौजूद एंटी-माइक्रोबियल और एंटी-बैक्टीरियल गुण गले की समस्याओं को दूर करने में सहायक होते हैं, जबकि गर्म पानी से गले को आराम मिलता है। वहीं, नींबू में मौजूद उच्च विटामिन-सी से रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूती मिलती है। ऐसे में गले की इन समस्याओं से राहत पाने के लिए एक कप गर्म पानी में एक चम्मच शहद और आधा चम्मच नींबू का रस मिलाकर सेवन करें।

कैमोमाइल टी- एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-वायरल गुणों से भरपूर कैमोमाइल टी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देने और गले की खराश समेत खुजली जैसी समस्याओं को तेजी से ठीक करने में मदद कर सकती है। लाभ के लिए एक गिलास गर्म पानी में एक चौथाई कप सूखे कैमोमाइल के फूल डालकर उबालें और जब पानी आधा जाए तो इसे छानकर कप में डालें। फिर इसमें स्वादानुसार शहद मिलाकर इसका सेवन करें।

पुदीने की चाय- एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों से भरपूर पुदीने की चाय गले की खराश को शांत करने के लिए अत्यधिक प्रभावी हैं। पुदीने की चाय की भाप लेने से बंद नाक का भी इलाज हो सकता है और आपके गले को भी काफी आराम मिल सकता है। लाभ के लिए दो कप गर्म पानी में 10-15 पुदीने की पत्तियां डालकर उबालें। कुछ सेकंड बाद इस चाय को छानकर इसका सेवन करें। आप चाहें तो इस चाय में भी स्वादानुसार शहद मिला सकते हैं ।

खबरें कार्य क्षेत्र से

श्रमयोग संस्थान सोसायटी पंजीकरण एक्ट के तहत पंजीकृत एक जन संस्थान है। श्रमयोग के द्वारा उत्तराखण्ड राज्य व देश के अलग-अलग हिस्सों में जन समुदायों के साथ मिलकर विकासात्मक गतिविधियों को अन्जाम दिया जाता है। यहाँ श्रमयोग के कार्य क्षेत्र की खबरें दी जा रही है। बच्चे अपने क्षेत्र में बदलते तापमान पर नजर रख रहे हैं। यहां उनकी अभिव्यक्ति को स्थान दिया जा रहा है। - सम्पादक

कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट

नैनीडांडा क्लस्टर

आसना

नैनीडांडा क्लस्टर में इस बार सभी समूहों की बैठक एक साथ एक ही स्थान रा0 प्रा0 विद्यालय कालिंकाखाल में की गई। बैठक में महोत्सव को लेकर चर्चा हुई। सदस्याओं को सूचित किया कि इस बार महोत्सव खुमाड़ में होने जा रहा है व इस बार महोत्सव दो दिन का होगा। इसी तरह चर्चाओं को आगे बढ़ाते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम को लेकर बात की गई। महोत्सव के लिये यातायात को लेकर विस्तार से बात हुई। महोत्सव में सभी जाना चाहाते हैं, पर जाए कैसे इस पर सदस्याओं ने आपस में बात करके यह निर्णय लिया की अपने समूह की बचत राशि से रूपये निकालकर बस बुक करके महोत्सव में जाऐंगे, जिसमें सभी सदस्याओं की सहमति थी। सदस्याओं से श्रम उत्पाद के बारे में बात की गई कि मंच आप सभी सदस्याओं से जखिया, तिल, मडुवा, भंगजीर इत्यादि खरीदने को तैयार हैं। आप सभी उसे साफ कर के अपना सामान मंच को दे सकते हैं। सदस्याओं ने बताया की इस बार बे-मौसम बारिश ने फसल को नुकसान पहुँचाया हैं। इस बार कुछ उत्पाद नहीं हो पाया हैं और कुछ तो जानवरों ने नुकसान पहुंचा दिया हैं। औलेथ गाँव से कुछ जखिया एकत्रित किया गया।

चाँच-झीमार एंव रथखाल क्लस्टर

रेनुका

चाँच-झीमार एंव रथखाल क्लस्टर में अक्टूबर माह की 2 तारीख को रथखात बाजार मे अंकिता भण्डारी एवं जगदीश को न्याय दिलाने के लिए एक रैली निकाली गई जिसमे श्रमयोग टीम एवं रथखाल के क्लस्टर के समूहों की सदस्याऐं और अन्य ग्रामीण एवं बाजार के लोग शामिल रहे। इस दौरान अंकिता भण्डारी एवं जगदीश चन्द्र को न्याय के लिए नारे लगाये गये। साथ ही 2 अक्टूबर गांधी जयन्ती पर रथखात बाजार मे लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरुक किया गया। ग्राम प्रधान व ग्रामीणों द्वारा वन विभाग को कूड़ेदान की व्यवस्था करने हेतु प्रार्थना पत्र भी लिखा गया।

असोज माह मे कामों की व्यस्तता के कारण समूह की बैठकें नहीं हो पाई। लेकिन पदाधिकारियों एवं सदस्याओ के साथ मोबाइल फोन से संपर्क जारी था। महोत्सव एवं श्रम-उत्पाद को लेकर लगातार बातचीत होती रहती है। कुछ समूहों मे भुगतान को लेकर बातचीत की गई। ज्यादातर समूहों में हल्दी का भुगतान हो चुका है। बाकी श्रम-उत्पाद को लेकर बात कहें तो अभी गहत, उड़द, मडुवा खेतों से निकाला जा रहा है बारिश के कारण कुछ फसलें नष्ट तो कुछ पीछे हो गई हैं। जिस कारण अभी वो तैयार नहीं हुई हैं। घरों मे सदस्याऐं कामों में अभी भी व्यस्त हैं इसलिए उत्पाद की सफाई में समय लगेगा।

गिगंडे क्लस्टर

गुंजन

गिगड़े क्लस्टर के अलग-अलग गांवों में समूहों की मासिक बैठकों का आयोजन किया गया। इस माह बैठकों के आयोजन का मुख्य विषय आगामी महिला महोत्सव था। जिसमें सदस्याओं के साथ 23 सितम्बर को हुई रचनात्मक महिला मंच की त्रैमासिक बैठकों के अनुभवों व मंच द्वारा लिए गये निर्णयों को समूहो के पदाधिकारियों द्वारा समूहों की बैठकों में साझा किया गया। सदस्याओं के साथ 9वें माहिला महोत्सव कें आयोजन को लेकर चर्चा की गई, जिसमे सदस्याओं को बताया गया कि इस बार का महोत्सव खुमाड़ में आयोजित किया जायेगा। इस बार महोत्सव हर साल के महोत्सव से थोड़ा अलग है, जिसमे सदस्याओं के साथ महोत्सव की रुपरेखा, आने जाने की व्यवस्था, खान-पान के स्टॉल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, बीजों के आदान-प्रदान को लेकर चर्चा की गई।

सदस्याओं के साथ श्रम-उत्पाद के भुगतान, नये श्रम-उत्पाद के एकत्रीकरण, व गुणवत्ता को लेकर चर्चा की गई व श्रम उत्पाद की रेट लिस्ट भी साझा की गई, सदस्याओं का कहना था कि इस माह अत्यधिक बारिश होने से फसल खराब हो गई हैं। जो कुछ थोड़ा बहुत बची हैं अभी उसका कोई अनुमान नहीं है कि वह सही होंगी भी या नहीं। सदस्याओं को सितम्बर माह में जो बीज वितरित किये गये थे, उन बीजों की प्रतिपुष्टि ली गई। जिसमे सदस्याओं का कहना था कुछ-कुछ बीज जैसे पालक, धनिया समय पर बो दिया था, जो अधिक बारिश की वजह से खराब हो गया है। बाकी का बीज असोज (घास) काटने के बाद बोयेंगे। कुछ सदस्याओ जिन्होंने मटर बोया था उन बीजो में अकुरण हो गया है।

जमरिया व थला क्लस्टर

सुरेन्द्र, श्रमयोग

अक्टूबर माह में दोनों क्लस्टर थला व जमरिया में श्रमयोग के सामाजिक पूंजी बढाओं अभियान, जो लगातार दस वर्षों से सल्ट विकास खण्ड में गतिमान है, इसके तहत मासिक बैठकों का आयोजन किया गया। यह अभियान ग्रामीण समुदायों को सामाजिक पूंजी के रूप में संगठित कर क्षमता संवर्धन हेतु कार्यरत है। इस अभियान के तहत स्वयं सहायता समूह प्रतिमाह सामाजिक विकास व ग्रामीण जीवन के साथ चल रही चुनौतियों के मुद्दों पर लगातार चर्चा कर रहे हैं। अक्टूबर माह में ये संगठन अपने खेतों में हो रहे उत्पाद को अच्छा बाजार दिलाने के लिए योजना बना रहें हैं ताकि सीमांत किसानों व ग्रामीण महिला किसानों को फसल का अच्छा दाम मिल सके। साथ ही ये संगठन नवम्बर माह के अंतिम रविवार को स्थानीय पर्व, लोक संस्कृति व स्थानीयता का संरक्षण व प्रचार-प्रसार हेतु नवाँ महिला महोत्सव आयोजित करने के लिए काफी उत्साहित हैं।

जसपुर क्लस्टर

आसना, श्रमयोग

अक्टूबर माह जिसे हमारे कार्यक्षेत्र में असोज का महीना कहा जाता है, यह समय गाँव में व्यस्तता का समय होता है। खास तौर से महिलाओं के लिए। महिलाएं बताती हैं कि पहले इस समय 22 तरह का अनाज खेतों से निकाला जाता था। इस माह बहुत काम होता था पर अब तो उतना काम नहीं होता है। अब अनाज की जगह सूखे घास ने ले ली हैं। अब महिलाएं सूखे बंजर खेतों से पशुओं हेतु 7-8 महिनों के लिये सूखा घास एकत्र करती हैं। इस कारण इस बार कुछ जगहों में बैठके नहीं हो पाई। परन्तु प्रत्येक समूह के पदाधिकारी को कॉल कर के उनसे बात की गई, महिला महोत्सव को लेकर व श्रम उत्पाद एकत्रीकरण को लेकर। ताकि इस बार की बैठक के मुख्य बिन्दु सभी समूहों तक पहुँच जाएं। पदाधिकरियों ने सूचना सभी समूह की सदस्याओं तक पहुचाई। श्रम उत्पाद एकत्रीकरण को लेकर सदस्याओं ने बताया कि इस बार उनके पास देने के लिए कुछ सामान नहीं है। पहले कुछ उत्पाद देने के लिए हो जाता था परन्तु इस बार नहीं हैं। कुछ बन्दरों, सुवरों ने नुकसान कर दिया तो कुछ अत्यधिक बरिश ने।

इस बार अक्टूबर माह में 5-6 दिन लगातार बारिश रही, जिससे आने-जाने वाली बसें एक दिन पूरी तरह बन्द रहीं। जगह-जगह पर सड़कें टूटी। कहीं पहाड़ खिसक कर नीचे आए तो गाँवों में किसी के घर के आगे का आंगन बैठा। किसी के घर के पीछे की दीवार में दरार आई। मौसम परिर्वतन के कारण काफी नुकसान हो रहा है। इस बार 14 तारीख को कोट जसपुर की बैठक में अजीम प्रेम जी फाउण्डेशन से आए कुछ साथी भी सम्मिलित हुए। उनका मुख्य उद्देश्य गाँव के जीवन को बारीकी से देखना, समझना और उसे जीना था।

घचकोट क्लस्टर

विजय, श्रमयोग

हर साल असोज माह में महिलाओं की व्यस्तता फसल निकालने व पशुओं के लिए चारा एकत्रित करने में रहती है। क्योकि जो चारा महिलायें अभी एकत्रित करती है वह पशुओं के लिए वर्षभर के लिए होता है। इन सभी कार्यों की व्यस्तताओं के वजह से विगत साल की तरह इस वर्ष भी महिलाएं अपने समूह की मासिक बैठकों का आयोजन नही कर पायी। परंतु जहां सम्भव था उन समूहों में फोन से सम्पर्क कर महोत्सव की तैयारियों के बारे में पूछा गया। महिलाओं का कहना था इस बार महोत्सव हमारे कलस्टर में है। हम लोग बहुत उत्साहित हैं कि हम किस तरह से महोत्सव को इस बार और अच्छा व बेहतर करें । हम सभी सदस्यायें इस महोत्सव की तैयारियों में लगी हैं। घचकोट में हम लोगों ने अपने समूह की ड्रेस तैयार कर दी है। जैसे ही सभी सदस्यायें असोज के कार्यो से फ्री होंगी, हम अपनी समूह की बैठक कर महोत्सव की तैयारियों में लग जायेंगे। समूह सदस्याओं का कहना था कि हम नवम्बर माह में अपनी समूह की बैठकें करेगें जिसमें हम सभी महोत्सव पर चर्चा करके तैयारियों में लग जायेगें।

भ्याड़ी क्लस्टर

दीपा देवी श्रमसखी

चार अक्टूबर से बीस अक्टूबर तक भ्याड़ी क्लस्टर की बैठकें की गई। बैठकों में महोत्सव को लेकर चर्चा की गई। जिसमें सदस्याओं का कहना था कि महोत्सव में हमारा पूरा सहयोग रहेगा। त्रैमासिक बैठक में महोत्सव को लेकर चर्चा की गई थी। उन विषयों को सदस्याओं को बताया गया। कुछ सदस्याओं ने कहा की उस समय शादी का समय है तो वहां जाना होगा। इस इस बार महिला महोत्सव दो दिवसीय होगा। 26 नवम्बर को परिचर्चा सत्र में भ्याडी क्लस्टर की महिलायें भी उपस्थित रहेंगी। सदस्याओं ने कहा कि हम पूरी तरह से खुमाड़ वालो की मदद करेंगे। महोत्सव में इस बार भी अपने आने-जाने की व्यवस्था स्वयं करनी हैं। सदस्याओं का कहना है कि हमें श्रमयोग की मदद की आवश्यकता है। महोत्सव में इस बार सांस्कृतिक कार्यक्रम सिर्फ महिलायें ही करेगी और साथ में समूह के माध्यम से स्टॉल भी लगाये जाऐंगे। जिसमें महिलाओं का कहना है कि हम स्वागत गीत भी गायेंगे।

श्रम-उत्पाद एकत्रीकरण को लेकर चर्चा की गई और उसकी गुणवत्ता पर बात की गई। सदस्याओं को मंच द्वारा तय किये गए उत्पादों का मूल्य बताया गया। बीजों को लेकर चर्चा की गई। सभी सदस्याओं ने बीज लगा रखे हैं। उत्पाद कितना होगा उसका पता अगली बैठक में चर्चा के दौरान लगेगा। बीज कोष के पैसे जमा किये गये। श्रमयोग पत्र के बारे में बताया, गया जिसमे सदस्यों को पढ़ने व लिखने के लिए प्रेरित किया। 22 सितम्बर के दिन रचनात्मक महिला मंच ने ब्लाक में जा कर ज्ञापन सौंपा था जिसमें प्रत्येक गाँव की समस्यायें रखी गई थी। उस पर भी चर्चा हुई।

बाल मंच के पर्यावरण चेतना केन्द्रों की रिपोर्ट

दिनाँक	प्रात: 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)				सांय 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)			
	गिगड़े सल्ट	औंलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट	गिगड़े सल्ट	औंलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट
1 अक्टूबर	24	27.5	19	26	25	28	20	27.5
2 अक्टूबर	24	28	20	26	25	28.5	22	27
3 अक्टूबर	24	27	18	26	25	28	21	28.5
4 अक्टूबर	24	28	20	26.5	25	27	21	28
5 अक्टूबर	24	27.5	19	27	24	27	22	28
6 अक्टूबर	24	28	17	27	23	27.5	19	28
7 अक्टूबर	21	27	15	27	20	26.5	19	26
8 अक्टूबर	20	27	13	26	20	26	18	24
9 अक्टूबर	20	26	14	24	21	25.5	16	24
10 अक्टूबर	22	25	13	23	20	26	19	24
11 अक्टूबर	22	24	18	23	23	25	16	24.5
12 अक्टूबर	22	24.5	19	23	23	24	22	24.5
13 अक्टूबर	22	23	20	23	23	24.5	22	24
14 अक्टूबर	22	24	18	24	23	25	20	24
15 अक्टूबर	21	24.5	15	24	23	24	19	25
16 अक्टूबर	21	24	13	24	22	25	23	25
17 अक्टूबर	21	25	15	24	22	25.5	20	25
18 अक्टूबर	20	24.5	18	23	22	24	19	24.5
19 अक्टूबर	20	24	21	23	22	25	22	24.5
20 अक्टूबर	20	23.5	19	23	22	24	21	23
21 अक्टूबर	20	24	23	22	22	24.5	24	23
22 अक्टूबर	20	25	24	21	22	24	25	22.5
23 अक्टूबर	20	24	23	21	21	23.5	25	23
24 अक्टूबर	20	24.5	22	21	21	24	21	23
25 अक्टूबर	20	24	23	21	21	25	22	22
26 अक्टूबर	20	23.5	22	21	21	24	24	22
27 अक्टूबर	20	23	20	21	21	24.5	22	23
28 अक्टूबर	20	24	22	21.5	21	24	21	23
29 अक्टूबर	20	23.5	23	21.5	21	24	25	23
30 अक्टूबर	20	23	19	21.4	21	23.5	23	22
31 अक्टूबर	20	23	23	21	21	23	24	22

वर्षा (मीमी)

दिनाँक	गिंगड़े (सल्ट)	औंलेथ (नैनीडांडा)	चांच (सल्ट)	बल्यूली (सल्ट)
6 अक्टूबर	3	29	-	2
7 अक्टूबर	14	23	-	15
8 अक्टूबर	12	36	-	14
9 अक्टूबर	30	54	-	26
10 अक्टूबर	118	43	-	128
12 अक्टूबर	40	10	-	44

चाँच धारा विकास कार्यक्रम

23 अक्टूबर, 2022

स्रोत का नाम	पी0एच0			टी0डी0एस0		
	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग
डौंठा पानी नौला	6.6	6.6	6.6	26	26	26
धारा पानी	7.2	7.2	7.2	38	38	38
शिव मन्दिर नौला	7.2	7.2	7.2	37	37	37
हैंड पंप नौला	7.9	7.9	7.9	37	37	37

26 अक्टूबर 1890 को इलाहाबाद में जन्मे गणेश शंकर विद्यार्थी भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की क्रान्तिकारी धारा के पत्रकार थे। कानपुर में हिन्दू-मुस्लिम दंगों के दौरान निसहायों को बचाते हुए 25 मार्च 1931 को वे शहीद हो गये। आज के दौर में उनके लिखे आलेख 'धर्म की आड़' को पूरी गम्भीरता के साथ पढ़ने व मनन करने की जरुरत है।

-सम्पादक

धर्म की आड़

इस समय देश में धर्म की धूम है। उत्पात किए जाते हैं, तो धर्म और ईमान के नाम पर, और जिद की जाती है, तो धर्म और ईमान के नाम पर। रमुआ पासी और बुद्धू मियाँ धर्म और ईमान को जानें, या न जानें, परंतु उनके नाम पर उबल पड़ते हैं और जान लेने और जान देने के लिए तैयार हो जाते हैं। देश के सभी शहरों का यही हाल है। उबल पड़ने वाले साधारण आदमी का इसमें केवल इतना ही दोष है कि वह कुछ भी नहीं समझता-बूझता, और दूसरे लोग उसे जिधर जोत देते हैं, उधर जुत जाता है। यथार्थ दोष है, कुछ चलते-पुरजे, पढ़े-लिखे लोगों का, जो मूर्ख लोगों की शक्तियों और उत्साह का दुरुप्रयोग इसलिए कर रहे हैं कि इस प्रकार, जाहिलों के बल के आधार पर उनका नेतृत्व और बड़प्पन कायम रहे। इसके लिए धर्म और ईमान की बुराइयों से काम लेना उन्हें सबसे सुगम मालूम पड़ता है। सुगम है भी।

साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में यह बात अच्छी तरह बैठी हुई है कि धर्म और ईमान की रक्षा के लिए प्राण तक दे देना वाजिब है। बेचारा साधारण आदमी धर्म के तत्त्वों को क्या जाने? लकीर पीटते रहना ही वह अपना धर्म समझता है। उसकी इस अवस्था से चालाक लोग इस समय बहुत बेजा फायदा उठा रहे हैं।

पाश्चात्य देशों में, धनी लोग गरीब मजदूरों के परिश्रम से बेजा लाभ उठाते हैं। उसी परिश्रम की बदौलत गरीब मजदूर की झोंपड़ी का मजाक उड़ाती हुई उनकी अट्टालिकाएँ आकाश से बातें करती हैं! गरीबों की कमाई से ही वे मोटे पड़ते हैं, और उसी के बल से, वे सदा इस बात का प्रयत्न करते हैं कि गरीब सदा चूसे जाते रहें। यह भयंकर अवस्था है! इसी के कारण, साम्यवाद, बोल्शेविज्म आदि का जन्म हुआ।

हमारे देश मे, इस समय, धनपतियों का इतना जोर नहीं है। यहाँ, धर्म के नाम पर, कुछ इने-गिने आदमी अपने हीन स्वार्थों की सिद्धि के लिए, करोड़ों आदमियों की शक्ति का दुरुप्रयोग किया करते हैं। गरीबों को धनाढ्यों द्वारा चूसा जाना इतना बुरा नहीं है, जितना बुरा यह है कि- वहाँ है धन की मार, यहाँ है बुद्धि पर मार। वहाँ धन दिखाकर करोड़ों को वश में किया जाता है, और फिर मन-माना धन पैदा करने के लिए जोत दिया जाता है। यहाँ है बुद्धि पर परदा डालकर पहले ईश्वर और आत्मा का स्थान अपने लिए लेना और फिर धर्म, ईमान, ईश्वर और आत्मा के नाम पर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए लोगों को लड़ाना-भिड़ाना।

मूर्ख बेचारे धर्म की दुहाइयाँ देते और दीन-दीन चिल्लाते हैं, अपने प्राणों की बाजियाँ खेलते और थोड़े-से अनियंत्रित और धूर्त आदमियों का आसन ऊँचा करते और उनका बल बढ़ाते हैं। धर्म और ईमान के नाम पर किए जाने वाले इस भीषण व्यापार को रोकने के लिए, साहस और दृढ़ता के साथ, उद्योग होना चाहिए। जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक भारतवर्ष में नित्य प्रति बढ़ते जाने वाले झगड़े कम न होंगे।

धर्म की उपासना के मार्ग में कोई भी रुकावट न हो। जिसका मन जिस प्रकार चाहे, उसी प्रकार धर्म की भावना को अपने मन में जगावे। धर्म और ईमान, मन का सौदा हो, ईश्वर और आत्मा के बीच का संबंध हो, आत्मा को शुद्ध करने और ऊंचे उठाने का साधन हो। वह, किसी दशा में भी, किसी दूसरे व्यक्ति की स्वाधीनता को छीनने या कुचलने का साधन न बने। आपका मन चाहे, उस तरह का धर्म आप मानें, और दूसरों का मन चाहे, उस प्रकार का धर्म वह माने। दो भिन्न धर्मों के मानने वालों के टकरा जाने के लिए कोई भी स्थान न हो। यदि किसी धर्म के मानने वाले कहीं जबरदस्ती टाँग अड़ाते हों, तो उनका इस प्रकार का कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाए।

देश की स्वाधीनता के लिए जो उद्योग किया जा रहा था, उसका वह दिन नि:संदेह, अत्यंत बुरा था, जिस दिन, स्वाधीनता के क्षेत्र में, खिलाफत, मुल्ला, मौलवियों और धर्माचार्यों को स्थान दिया जाना आवश्यक समझा गया। एक प्रकार से उस दिन हमने स्वाधीनता के क्षेत्र में, एक कदम पीछे हटकर रखा था। अपने उसी पाप का फल आज हमें भोगना पड़ रहा है।

महात्मा गांधी धर्म को सर्वत्र स्थान देते हैं। वे एक पग भी धर्म के बिना चलने के लिए तैयार नहीं। परंतु उनकी बात ले उड़ने के पहले, प्रत्येक आदमी का कर्त्तव्य यह है कि वह भली-भाँति समझ ले कि महात्माजी के धर्म का स्वरूप क्या है? धर्म से महात्माजी का मतलब धर्म के ऊँचे और उदार तत्त्वों ही से हुआ करता है। उनके मानने में किसे एतराज हो सकता है।

अजाँ देने, शंख बजाने, नाक दाबने और नमाज पढ़ने का नाम धर्म नहीं है। शुद्धाचरण और सदाचार ही धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं। दो घंटे तक बैठकर पूजा कीजिए और पंच-वक्ता नमाज भी अदा कीजिए, परंतु ईश्वर को इस प्रकार की रिश्वत के दे चुकने के पश्चात्त, यदि आप अपने को दिन-भर बेईमानी करने और दूसरों को तकलीफ पहुंचाने के लिए आजाद समझते हैं तो, इस धर्म को, अब आगे आने वाला समय कदापि नहीं टिकने देगा। अब तो, आपका पूजा-पाठ न देखा जाएगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका आचरण होगी। सबके कल्याण की दृष्टि से, आपको अपने आचरण को सुधारना पड़ेगा और यदि आप अपने आचरण को नहीं सुधारेंगे, तो नमाज और रोजे, पूजा और गायत्री आपको देश के अन्य-लोगों की आजादी को रौंदने और देश भर में उत्पातों का कीचड़ उछालने के लिए आजाद न छोड़ सकेगी।

ऐसे धार्मिक और दीनदार आदमियों से तो, वे ला-मजहब और नास्तिक आदमी कहीं अधिक अच्छे और ऊँचे हैं, जिनका आचरण अच्छा है, जो दूसरों के सुख-दु:ख का खयाल रखते हैं और जो मूर्खों को किसी स्वार्थ-सिद्धि के लिए उकसाना बहुत बुरा समझते हैं। ईश्वर इन नास्तिकों और ला-मजहब लोगों को अधिक प्यार करेगा, और वह अपने पवित्र नाम पर अपवित्र काम करने वालों से यही कहना पसंद करेगा, मुझे मानो या न मानो, तुम्हारे मानने ही से मेरा ईश्वरत्व कायम नहीं रहेगा, दया करके, मनुष्यत्व को मानो, पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो !

कब जायेगी ये जाति

✍राकेश, सल्ट

बात 2 सितम्बर की है, मैं किसी कार्य से भिकियासैन गया था। मैंने सोचा की साथ-साथ बाइक की सर्विस भी करा लूं। एक दुकान पर गया मकैनिक से बात की, सर्विसिंग का काम शुरु हुआ, मकैनिक काम कर रहा था, मैं खाली बैठा था। धीरे-धीरे बात शुरु हुई- कहाँ से आये हो, क्यों आये हो? मैंने बताया कि मैं एस.डी.एम मैम से मिलने आया हूँ। पहले मकैनिक ने मुझे ध्यान से देखा और फिर बोला ''अच्छा मर्डर केस के सिलसिले में आये हो।'' मैं एकदम चौंका, और सोचा की मैंने सुनने में तो कोई गलती नहीं की, मैंने फिर बोला क्या? और फिर उसने वही दोहराया।

मैंने बोला मर्डर, नहीं तो, पर किसका? और आपने मुझे ऐसा क्यों बोला। उसने बोला की आज यहां लोग इसी घटना को लेकर आ रहे हैं। किसी व्यक्ति की कल शाम कुछ लोगों ने हत्या कर दी। मैंने पूछा किस मामले में? मकैनिक बोला शायद मन-पसंद की शादी का मामला है और लड़की के घर वालो ने ऐसा किया है। मैं सोच में पड़ गया की हमारे क्षेत्र में ऐसी घटना, और फिर पता चला की मामला बस मन-पसंद शादी का नहीं, बल्कि दलित और तथाकथित सवर्ण जाति का है, जिसमें जगदीश को महज इस लिए मार दिया गया की वह दलित था।

हमारे क्षेत्र में यह घटना पहली घटना नहीं है, जिसमें ऐसा हुआ। हम लोग कफल्टा काण्ड से भी भलीभांति परिचित हैं, जिसे हर कोई अलग-अलग तरीके से देखता है या फिर 2016 में बागेश्वर में जब दलित द्वारा चक्की को छूने भर से उसकी गर्दन काट दी गयी थी। कितनी घृणा है समाज के मन में जाति को लेकर और हाल के सालों में ऐसी घटनायें बढ़ती जा रही है। देशभर में आजादी के बाद भी न जाने कितने ही जगदीश जाति के दुष्चक्र में अपना जीवन गवां चुके है।

आखिर इसका अंत कब होगा? सच तो यह है कि कथित उच्च जाति के लोगों ने अपनी सत्ता चलाने के लिए इंसानों में भेद किया। मेरी बाईक की सर्विसिंग का काम पूरा हो चुका था। मैं चन्द्रकांत देवताले जी की एक कविता की कुछ पंक्तिया अपने आप से बोलते हुए घर की दिशा में चला आ रहा था।

अख्बार के चेहरे पर

जिस वक्त तीन बच्चे
आईसक्रीम खाते हुए हंस रहे हैं।
उसी वक्त
बीस पैसे में समान ढोने के लिए
लुका-छिपी करते बच्चों के पुट्ठों पर
पुलिस वालों की बेतें उमच रहीं हैं।
ईश्वर होता तो इतनी देर में
उसकी देह कोढ़ से गलने लगती।
सत्य होता तो वह अपनी
न्यायाधीश की कुर्सी से उतरकर
जलती सलाखें आखों में खुपस लेता।
सुंदर होता तो वो अपने चेहर पर
तेजाब पोत अंधें कुए में कूद गया होता
लेकिन? अगर वो होता तो।

रथखाल में कूड़ादान बनाने के सम्बंध में क्षमता स्वयं सहायता समूह द्वारा लिखा गया पत्र

सेवा में,
वन क्षेत्राधिकारी
सल्ट रेंज, जौरासी
अल्मोड़ा वन प्रभाग, अल्मोड़ा

विषय: रथखाल में कूड़ादान बनाने के सम्बंध में।

महोदय,

आप अवगत ही होंगे कि, रथखाल बाजार व उसके आस-पास का क्षेत्र कूड़े से अटा पड़ा है। जगह-जगह कूड़ा बिखरा हुआ है, जिसकी वजह से बाजार से लगी वन भूमि भी बुरी तरह प्रदूषित हो रही है। वन भूमि में बिखरा हुआ प्लॉस्टिक व अन्य कचरा न सिर्फ क्षेत्र के लिए खतरा है, बल्कि इससे वन्य जीवन भी बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। हमने 2 अक्टूबर के दिन क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाते हुए रथखाल बाजार व आस-पास के क्षेत्रों में साफ-सफाई की थी।

महोदय, यदि बाजार के आस-पास एक कूड़ा घर बन जाता है तो कूड़ा एक जगह पर एकत्र हो सकेगा। इससे न सिर्फक्षेत्र में प्रदूषण कम होगा बल्कि वन्यजीवन भी सुरक्षित होगा। अत: आपसे निवेदन है कि, रथखाल बाजार के आस-पास कूड़ाघर बनाने का कष्ट करें, हम सहयोग के लिये तैयार हैं।

धन्यवाद।

निवेदक

क्षमता स्वयं सहायता समूह
रथखाल (सल्ट)
जिला अल्मोड़ा

बाल मंच का पृष्ठ

इस पृष्ठ में श्रमयोग के ''प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान'' से निकली जानकारियों के साथ-साथ बाल मंच की गतिविधियों एवं बाल मंच के सदस्यों की अभिव्यक्तियों को स्थान दिया जाता है। एवं बच्चों से सम्बन्धित लेखन को स्थान दिया जाता है।

-सम्पादक

मानव सभ्यताओं का ज्ञान-विज्ञान-10

शंकर दत्त, श्रमयोग

कृषि क्रान्ति ने मानव की भूख बढ़ा दी-पेट की भी और मस्तिष्क की भी। इस क्रान्ति ने मानव सभ्यता की दिशा पूरी तरह बदल दी। शारीरिक रूप से एक स्थान पर ठहरा मनुष्य कृषि क्राति के चलते मानसिक रूप से अधीर हो रहा था। खेती और संग्रहण के चलते सेपियन्स छोटे-छोटे समूहों में एक जगह रहने लगे। एक जगह रहने की पहली शर्त खेती के लिए उपजाऊ जमीन और वातावरण था। एक जगह पर संसाधन कम होते ही ये छोटे-छोटे समूह नई जमीन तलाश कर नयी जगह बसा लेते थे। इस क्रम ने गावों को जन्म दिया। गाँव में रहने की परिथितियों एवं लगातार समूहों में वार्तालाप ने सेपियन्स को परस्पर सहयोगी बनाने में मदद की।

इस विकास क्रम में सहयोग इसलिए भी आवश्यक था कि जीवन को चलाने के लिये एक ही जगह पर कई जरूरतें होती थी, जो किसी एक द्वारा पूरा करना सम्भव नहीं था। जैसे गांव के जन-जीवन में खाना, रहना, आवास, सुरक्षा के लिए सामूहिकता की जरूरत थी। इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण बना विनिमय। वातावरण के अनुरूप अब मानव अपने संसाधनों का आदान-प्रदान करने लगा। अगर किसी वातावरण मे अन्य परिस्थितियाँ ठीक हों तो चावल के बदले सेवा का विनिमय जैसी प्रक्रियाएं प्रारम्भ हुई। अधिक खाद्य संसाधन होने पर सेपियन्स अपने नजदीकी समुदाय मे सहयोग मिलने की अपेक्षा में अनाज, फ्ल और जानवरों को एक-दूसरे को देते थे। इस चलन ने आगे चलकर विनिमय की प्रथा को और मजबूत कर समाज को बाजार दिया।

बाजार के उदय के साथ प्रारम्भ हुऐ विशेषज्ञ और प्रतियोगिता। अब सेपियन्स समझौता नहीं करना चाहता था। वो क्यों एक ही तरह के आलू खाये जब थोड़ी दूर यात्रा करके उसको दूसरी जगह पर स्वादिष्ट आलू मिलने लगे।

विनिमय के बढ़ते चलन ने विनिमय स्थल का आकर बढ़ा दिया, जो व्यवस्था अभी तक विश्वास और परस्पर सहयोग से चल रही थी उसमें लोगों को धोखा होने लगा। विनिमय के लिए दूर दराज से आये लोगों के पास विश्वस्त व्यवस्था नहीं थी। विनिमय प्रारम्भ होने के कुछ हजार वर्षों मे ही सभ्यता को शहर और मुद्रा जैसी व्यवस्था की जरूरत होने लगी और समाज में मुद्रा का जन्म हुआ।

किताब-'सेपियन्स' और 'आग से अन्तरिक्ष तक' पर आधारित

क्रमशः

अब बोलेगी कठपुतली

संचार अभियान के संचालक रामलाल किसी परिचय के मोहताज नहीं है। लोक माध्यमों के द्वारा समाज को जागरुक करने की उनकी लम्बी यात्रा रही है। आजकल अपनी कठपुतली को लेकर वो डिजिटल माध्यम से 'अब बोलेगी कठपुतली' कार्यक्रम कर रहे हैं। यू-ट्यूब में इस कार्यक्रम को अच्छी लोकप्रियता मिल रही है। यहाँ प्रस्तुत है धर्म व जाति को आधार बनाकर समाज में नफरत फैलाने का कुत्सित प्रयास करने वालों को आईना दिखाता, कठपुतली द्वारा अभिनित उनका नाटक- 'संविधान की बात कटपुतली के साथ'।

मोहन दास- पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय। पत्थर पूजे हरी मिले तो मैं पूजूँ पहाड़। घर का पत्थर कोई ना पूजे, पीस खाए संसार।

कंकड पत्थर जोड़ के मस्जिद लीनी बनाऐ ता चढ़ मुल्ला बाग दे क्या बहरा हुआ खुदाए।

शन्ति बहन: क्या बात है। आज इतने आध्यात्मिक और दार्शनिक हो रखे हो। जो बोल रहे हो इसके अर्थ भी जानते हो क्या?

मोहन दास: अरे शान्ति बहिन। बरसो से ये दोहे बोले जा रहे हैं। आज मेरा मन बैचेन हो रहा था सोचा मैं भी ये दोहे बोलूँ, शायद थोड़ी शान्ति मिल जाय।

शन्ति बहन: 75 वर्ष पहले देश ने शान्ति और अमन के लिए अंग्रेजो से आजादी ली थी। हमने उस समय इन दोहों का साराश समझ कर हमारे संविधान सभा ने महान संविधान बनाकर हम भारत के लोगों को दिया है।

मोहन दास: तुमे कैसे पता! घर का चुला चौका करने वाली ज्ञान दे रही हो, तुमने कहाँ से पता किया?

शन्ति बहन: अरे! सिर्फ पढ़ने-लिखने से कोई ज्ञानी नही बन जाता, सबका ओट (वोट) देने का अधिकार है।

मोहन दास: अच्छा।

शन्ति बहन: ओट (वोट) इसलिए देना चाहिए कि सरकार सबको समान समझे, नागरिको की गरिमा का ध्यान रखे और आपस मे प्रेम हो। द्वेश, ईष्या, घमण्ड न हो, ये हमार मूल सिद्धान्त हैं। संविधान मे लिखा है। कबीर दास जी ने इस दोहे कि रचना बरसो पहले कर दी थी।

मोहन दास: क्या बात कह रही हो! तो तुम फिर एक बात बताओ मुझे इस दोहे का मतलब बताओ। ये संविधान में कहाँ है? पत्थर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़ इसका क्या मतलब है।

शन्ति बहन: अरे हमारे संविधान में सभी धर्मों को अलग-अलग हिसाब से पूजा पद्धति करने का अधिकार है। कबीर दास जी ने कहा है अंधविश्वास मे न पड़ों। पत्थरो की पूजा करने से भगवान नहीं मिल जाते हैं। अरे, अगर पूजा भी करनी है तो उस पत्थर की पूजा करो जिसकी पीसी खाते हो।

मोहन दास: अच्छा ये बात है तो ऐ बात बताओ।

शन्ति बहन: हाँ ।

मोहन दास: ये संविधान में कहाँ है? कंकड पत्थर जोड़ के मस्जिद लीनी बनाऐ, ता चढ़ मुल्ला बाग दे क्या बहरा हुआ खुदाए।

शन्ति बहन: अरे! संविधान में लिखा है धर्म-जाति से ऊपर उठकर सरकार बनाऐं न कि मन्दिर-मस्जिदों के नाम पर लड़े। रास्तों का नाम कर्मपथ रखकर जिस पर लोग सैर करेंगे इससे गरीबों का क्या फायदा होगा।

मोहन दास: तो क्या लोग पागल है क्या?

शन्ति बहन: मुझे नहीं पता। लोग तय करेंगे, पर हमारे टैक्स के पैसो का उपयोग जनता के लिए होना चाहिए।

मोहन दास: तुम्हें डर नहीं लगता इतना बोल रही हो।

शन्ति बहन: सच बोलने से मानवता व संविधान की रक्षा होती है तो मैं बोलुंगी।

मोहन दास: अच्छा सच कहती हो। तुम्हारी बात सुनकर मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है और मुझे एक दोहा और याद आ गया ।

शन्ति बहन: हाँ

मोहन दास: दोहा ये है कि- कबीर तेरी झोपड़ी गल कटियन के पास, करनी अपनी जाऐगा कौन बेटा कौन बाप। तो हमें अपना फर्ज निभाना चाहिए हमें कर्तव्य तो निभाना ही चाहिए।

शन्ति बहन: हाँ संविधान में लिखा है नागरिक अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्य का पालन जरूर करें।

मोहन दास: इसके लिए वर्तमान में एक ही कर्तव्य है और वो है संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन, समाजवादी, पंथ निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसमें समता और नागरिकों की व समाज की गरिमा, जिसमें समाज को आर्थिक-राजनैतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति और विशवास, धर्म, उपसना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा, अवसर की समता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति की गरिमा, राष्ट्र की एकता, अखण्डता सुनिचित करने वाली बंधुता बढ़ाने की जरूरत है।

शन्ति बहन: यही तो संविधान का मूल सिद्धान्त है।

मोहन दास: वर्तमान में इस मूल सिद्धान्त की बहुत सख्त जरूरत है। संविधान को बचाना, लोकतांत्रिक संस्थाओं को बचाना, देश की गरिमा को बचाना और इसमें जो हम भारत के लोग है उनको बचाने के लिए हमको बोलना चाहिए और अपना कतर्व्य निभाना चाहिए।

आखिर कैसे शुरू हुई थी धरती पर जीवन की कहानी

सुप्रीत सैनी, आईआईटी, बॉम्बे

एक अनुमान के अनुसार धरती की उम्र साढ़े चार सौ करोड़ साल है, लेकिन यहां जीवन की शुरुआत कैसे, कितने समय में हुई और कहां से हुई, इसकी भी कई कहानियां हैं। हम अक्सर ये सोचते हैं कि क्या इस विशाल ब्रह्मांड में और कहीं जीवन है? अगर है तो क्या वहां के जीव हम जैसे ही दिखते होंगे? क्या उनसे संपर्क करना मुमकिन होगा? मेरे विचार से यह बहुत कठिन सवाल हैं- हो सकता है इनका जवाब हमें बहुत समय तक न मिले, शायद कभी न मिले, पर यहां मैं हमारी पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत कब हुई, इस बारे में बात करना चाहता हूँ।

धरती की उम्र कुछ 450 करोड़ साल के आसपास अनुमानित है। इन 450 करोड़ साल में जीवन की शुरुआत कब हुई? अगर जीवन की शुरुआत तक पहुंचना 'आसान' था, तो पृथ्वी की स्थापना के जल्दी बाद ही जीवन शुरू हुआ होगा। लेकिन अगर जीवन की शुरुआत तक पहुंचने का सफर कठिन रहा होगा, तो पृथ्वी पर जीवन शुरू होने मे काफी समय लगा होगा। आज हम जानते हैं कि जीवन की शुरुआत लगभग 400 करोड़ साल पहले हुई थी। यह कहां हुई थी, इसको लेकर वैज्ञानिकों के पास अलग- अलग धारणाएं हैं, पर उनमें से एक प्रबल धारणा कहती है कि जीवन की शुरुआत समुद्र की सतह पर हुई थी। हमारे अनुमान कहते हैं कि जीवन तक पहुंचने का सफर धरती पर जल्दी ही कर लिया गया। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि पृथ्वी के बनने के बाद बहुत समय तक हमारे गृह की सतह पर उथल-पुथल चलती रही। इस दौरान, गरम पिघली धातु और हवाएं बहती रही। ऐसे वातावरण मे कार्बन पर आधारित जीवन का पनपना असंभव था। जब पृथ्वी का तापमान गिरा, जीवन की शुरुआत तभी संभव थी। ऐसा सोचे तो लगता है कि जीवन का उद्भव 'आसान' होता है, और अगर वो धरती पर आसान रहा है, तो ब्रह्मांड में और जगह भी आसान रहा होगा। मेरे विचार से ऐसा सोचना ठीक है, पर उसके बाद जो धरती पर हुआ, उससे यह सवाल थोड़ा पेचीदा हो जाता है।

पहले जीव जो धरती पर आए, उन्हें अंग्रेजी में प्रोकैरेयोट कहा जाता है। इन जीवों में न्यूक्लियस यानी केंद्रक नहीं होता, और हमारी कोशिकाओं के मुकाबले मे यह बहुत सरल होते हैं। बैक्टीरिया प्रोकैरेयोट किस्म के होते हैं। यह बैक्टीरिया वही हैं जिन्हें मारने के लिए हम एंटीबायोटिक खाते हैं। जब जीवन का अविष्कार धरती पर हुआ, तो दो तरह के प्रोकैरेयोट सामने आए। एक का नाम बैक्टीरिया है और दूसरे का आर्किया यह दो किस्म की कोशिकाएं सरल होती हैं और 400 करोड़ साल पहले धरती पर आकर इन्हीं दोनों का धरती पर बोलबाला रहा। ऐसा लगभग 200 करोड़ साल तक चला। इतने लंबे अंतराल के बाद एक आर्किया ने एक बैक्टीरिया को अपने अंदर समा लिया। यह घटना कब और कैसे हुई, इस पर आज भी अनुसंधान जारी है और इस प्रसंग की बारीकियां हम आज नहीं जानते हैं। पर इस एक घटना ने धरती पर जीवन का रुख बदल दिया। आर्किया के अंदर बैक्टीरिया जाने से एक यूकेरियोट कोशिका पैदा हुई। हम अपने आसपास जितनी प्रजातियां देखते हैं- पेड़, पौधे, जानवर, पक्षी और हम स्वयं- सभी उस यूकेरियोट कोशिका का नतीजा हैं।

आर्किया के अंदर जाने वाला बैक्टीरिया क्रमागत उन्नति के एक प्रक्रिया के बाद एक कोशिका का वह केंद्र बन गया, जहां कोशिका की ऊर्जा का उत्पादन होता है। ऐसा होना धरती पर जीवन के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण कदम था। ऐसा माना जाता है कि इस एक घटना से एक कोशिका जितनी ऊर्जा थी वह बहुत बढ़ गई, और उसी कारण से मनुष्यों जैसे जटिल जीवों का धरती पर आना संभव हुआ। पर ऐसा होने में 200 करोड़ साल क्यों लगे? इस सवाल का कोई सरल जवाब नहीं हैं। क्या अगर ब्रह्मांड में कहीं और जीवन है तो क्या वहां भी ऐसा होने मे इतना ही समय लगा होगा? या, क्या ऐसा वहां हुआ भी होगा? दरअसल हम नहीं जानते की धरती पर जीवन की इस अत्यंत महत्वपूर्ण घटना किन परिस्थितियों में हुई। ऐसा होने मे कितना योगदान 200 करोड़ के विशाल अंतराल का है और कितना एक बहुत महत्वपूर्ण घटना का है, यह रहस्य खुलने मे अभी कुछ और समय लगेगा।

'दि वायर हिन्दी' से साभार

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक शंकर दत्त ने नौटियाल प्रिंटर्स ग्राम माजरी माफी, मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से मुद्रित कर ग्राम श्यामपुर, पो0 अम्बीवाला, प्रेमनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादक-अजय कुमार

सभी पद अवैतनिक हैं।

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा)